श्रीयुत् केशरीचंदजी लूनिया की पौत्री सौभाग्य कुँवर के स्मरणार्थ ।

श्री खरतर गच्छीय

विधि सहित

पंच प्रतिक्रमण सूत्र.

प्रकाशक—

रामलाल लूनिया नयाबाजार
अजमेर

श्रीयुत डॉक्टर वारशी गुलाबचंद मथाणी H L M S के प्रबंध से श्री जैन सुधारक प्रेस, अजमेर में मुद्रित हुई.

प्रथमावृत्ति १००० प्रति | सन् १९१६ | वि० संवत् १९७३

भेट (मुफ्त).

श्रीयुत केसरीचंदजी लूणिया की पौत्री सौभाग्य कुंवर के स्मरणार्थ २०० पुस्तकें मुफ्त भेट करने को श्रीयुत् केसरीचन्दजी ने रुपये ५०) देकर इस पुस्तक के छपाने में सहायता की है सो जो साहिब मुफ्त मंगावेंगे उनको डाक व्यय के लिये एक आने का टिकट भेज देने पर मुफ्त भी भेज देंगे.

इस पुस्तक को मुफ्त लेकर वा मूल्य से लेकर अवश्य लाभ उठावें और इस पुस्तक को उपयोग से रक्खें क्योंकि ज्ञान की विराधना करने से ज्ञानावरणीय कर्म बंधते हैं.

और आपभी यथा शक्ति ज्ञान प्रचार के लिये सदा तत्पर रहें.

प्रगटकर्त्ता.

* ॐ परमेष्ठिने नमः *

॥ अथ ॥

श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ।

॥ अथ नवकार मंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमोआयरियाण ॥ ३ ॥ णमो उवझायाणं ॥ ४ णमो लोए सव्वसाहूण ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्व-पावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढम

हवइ मंगलं ॥९॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुणा कें थापनाजीकी थापना करें, तब तेरे बोल चिंतवे, सो* कहते हैं ॥

॥ अथ थापना चार्यजी की तेरे पडिले हणा

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ २ ॥ काय गुप्ति ॥ आदरुं ॥३॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणवृत्ति में कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

अथ खमासमण

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

---

* तप गच्छ वाले पंचिन्द्रिय का पाठ पढते हैं।

अथ सुगुरु ने शाता सुख पृच्छा

॥ इच्छकार भगवान सुहराइ, सुहदेवसी. सुख तप शरीर निराबाध सुखसंयम यात्रा निर्वहो छोजी ? स्वामी शाता छेजी ? इति ॥ ४ ॥ एमे गुरुने कही नमस्कार करे, तवारें गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछे नीचें बेठ के जिमणा हाथ नीचा कर के अब्भुठिओमि कहे पीछे खमासमण दे के इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेह. पीछे इच्छं कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिले हण के पच्चीश बोल लिखते है ॥

॥ सूत्र, अर्थ साचो सर्दहु ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरु. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती विरीया कहणा ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥२ ॥ दृष्टिराग ॥३॥ परिहरु ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ आदरुं ॥ यह नव पडिलेहण डावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्रविराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥२॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥१॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥३॥ ए तीनुं निलाडे मस्तकें परिहरुं ॥

॥ ऋद्धिगारव ॥ १॥ रसगारव ॥ २ ॥ शातागारव ॥ ३ ॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मिच्छादंसणशल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंभे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय डाबे खंभे परिहरु ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन डाबे हाथे परिहरुं ॥

॥ भय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुर्गच्छा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

॥ पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन डाबे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रस काय ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरु ॥ इति मुहपत्ति पडिलेहणा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीछे खडा होय के इच्छामि खमासमण का पाठ कहे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछे इच्छं कहे कें फेर खमासमण देकें इच्छा० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देइ थोडो झुकी तीन नवकार गुणी इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पछी करेमि भंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चक्खाण ॥

॥ करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ॥ जावनियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछें खमासमण दे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ गुरु कहे पडिक्कमह. पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

अथ इरियावहियं ॥

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियाव-

हियाए विराहयाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाण क्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा सताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदया, बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ तस्स उत्तरी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्छित करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणहाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आ-

गारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिओ ॥ हुज्भ मे काउस्सग्गो ॥ ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरॉमि ॥ ५ ॥ इति ॥ ६ ॥ इहांचार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग करे. पीछें णमो अरिहंताणं कहे कें काउस्सग्ग पारकें मुखसें प्रगट लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च वंदे ॥ संभव मभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्भंस वासुपुज्भं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ्ठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभि. थुआ ॥ विहुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय

वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा ॥ आइचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वरगंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सव्वलोए० इति ॥ १० ॥

पीछें खमासमण देई इच्छा० ॥ भगवन् वैसणोसंदिस्सावुं? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे के वली खमासमण देकर ॥ इच्छा० ॥ भगवन् वेसणो ठाउं? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे के खमासमण देकर इच्छा० ॥ भ० ॥ सिज्झाय संदिस्सावुं? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहेके वली खमासमण देकर इच्छा० ॥ भग० ॥ सिज्झाय करु? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें खडे हो कर आठ नवकार कहकर सज्झाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ पागरणो संदिस्सावुं? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छ कह कर खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भ० ॥ पागरणो पडिग्गाउं? गुरु कहे पडिग्गाएह ॥ पीछें इच्छ कही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायि-

कवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सिज्झाय करेह, ऐसे कहे ॥ इति प्राभातिक सामायिक ॥

अथ राई प्रतिक्रमण विधि प्रारंभ ।

प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा० भ० ॥ चैत्य-वंदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछे इच्छं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

अथ सकल तीर्थंकर नमस्कारो लिख्यते ॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजिउज्जिंत ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरि मंडण ॥ १ ॥ भरुअच्छेह मुणिसुव्वय, महुरिपास दुह दुरिय खंडण ॥ अवरविदेहिज तित्थयर, चिहुंदिशि विदिसि जं केवि ॥ तीआणा गय संपयं वंदुं जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

कम्मभूमिहिं २ पढम संवयणि ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लब्भई ॥ नवकोडीहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडीहिं वरनाण ॥ समणह कोडी सहस्स दुई,

थुणिज्जइ निच्च विराए ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लरका उप्पन्न अट्ठ कोडीओ ॥ चउसय छायासीया, तिल्लुके चेइए वंदे ॥ २ ॥ वदे नव कोडि सयं, पणवीस कोडि लरक तेवन्ना ॥ अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अठासिया पाडिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

अथ जंकिंचि ।

ज किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पायाले माणुमे लोए॥ जाइं जिणविंबाइ ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥इति॥१२॥

अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ।

नमुत्थुणं अरिहंताण, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराण तित्थगराणं, सयं सबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण. पुरिससीहाण, पुरिसवरपुडरीआण पुरिसवरगंधहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण लोग पईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चरकुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाण ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीण ॥ ६ ॥ अप्पडिहय

वरनाणं दंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं. सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मव्वाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ भयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ भविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदा- मि ॥ १३ ॥

अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरि अ लोए- अ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो ॥ तत्थ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ भगवन् जावंत केवि साहू ॥ भरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ ॥ तिविहेण तिदंडविरियाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य ॥ -
॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पास ॥ पास वंदामि कम्म घण मुक्क ॥ विसहर विसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवास ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंत ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुओ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ दुठ जरा जंति उवसाम ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरि एसुवि जीवा ॥ पावंति न दुरक दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामर ठाण ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस ॥ भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्झ बोहिं ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह पभावओ भयवं ॥ भवनिव्वेओ मग्गा, णुसारि आ इठ फलसिद्धी

॥ १ ॥ लोग विरुद्धच्चाओ ॥ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुह गुरुजोगोतव्वय, ण सेवणा आभव मखंडा ॥२॥ ॥ १७ ॥ इत्यादि जय वीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछैं खमासमण देकैं इच्छा० ॥ भ० ॥ कुसुमिण दुसुमिण राइ पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ! गुरु कहे करेह. पीछै इच्छं कह कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायच्छित विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ उससिएणं ॥ इत्यादि पाठकहे कें सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउसग्ग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर काउस्सग्ग पारी कें मुख सें एक लोगस्स का पाठ प्रगट कहे. जो रात्रि में गुण संबंधि मोट को दूषण लागो होवे तो काउसग्गमांहे ॥ सागरवरगंभीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पड्डिक्कमणा ठायवे का अवसर हुवा ॥

अब खमासमण देई श्रीआचार्यजी मिश्र कहिं कें वांदीयें ॥ १ ॥ खमासम देइ श्री उपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिये खमासमण ॥ २ ॥ देई जंगम युगप्रधान वर्त्तमान

भट्टारक श्री पूज्यजी का नाम लेके वांदीये ॥ ३ ॥ खमा समण देई के सर्व साधुजी कुं वांदीयें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमण सें पडिक्कमणा ठावी गोडालीयें बैठ कें मस्तक नमाय कर दोनु हाथें मुहपत्ती मुहडे दे कर ॥ सव्वस्स विराइय ॥ इत्यादि पाठ कहे परंतु इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं इस माफक न कहे ।

अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुप्भासिय दुच्चिठि अ इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं० ॥
तस्सभिच्छामि दुक्कडं इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछे नमुत्थुणं कह कें खडा होय कें ॥ करेमिभंते सामाइय सावज्ज जोगं पच्चरकामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे पीछे इच्छामि ठामि काउस्सग्ग जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इच्छामि ठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिओ अ-

इआरो कओ॥ काइओ वाइओ माणसिओ॥ उस्सुत्तो उम्म-
ग्गो अकप्पो॥ अकरणिज्जो॥ दुज्झाओ॥ दुव्विचिंतिओ
अणायारो॥ अणिच्छिअव्वो॥ असावगपाउग्गो॥ नाणे
तह दंसणे चरित्ताचरित्ते॥ सुए सामाइए॥ तिन्हं गुत्ती-
णं॥ चउन्हं कसा याणं॥ पंचन्हमणुव्वयाणं॥ तिन्हं
गुणव्वयाणं॥ चउन्हं सिरकावयाणं॥ बारसविहस्स
सावगधम्मस्स॥ जं खंडिअं जं विराहिअं॥ तस्स मि
च्छामि दुक्कडं॥ इति॥ इहां देवासियं के ठिकानें राइयं
कहनां॥ इति॥ १६॥

॥ पीछें तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थ उससिएणं कह कर चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्त प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए॥ इत्यादि कहनां, सो लिखते हैं॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए॥ बोहिलाभवत्तिआए॥

निरूवसग्ग वत्तिआए ॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पीछें अन्नत्थकही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करकें पार कें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुरकरवरदी॰ सुयस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते है ।

॥ अथ पुख्करवरदी ॥

॥ पुख्करवरदीवड्ढे, धायइ संडेअ, जंबुदीवे अ ॥ भरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिर पडलविद्ध, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्य ॥ २ ॥ जाईजरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलविसाल सुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चि अस्स, धम्मस्स सार मुवलप्भ करे पमाय ॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिण मए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्भूअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइठिओ जग मिणं, तेलुक्कमच्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ

धम्मु त्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नत्थुससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गके मांहे आजुणा चार पहर चिंतवे. सो आगें लिखेंगे. पीछें सिद्धाणं बुद्धा-णंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराओ, तारेइ नरं व ना रिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स तं धम्मचक्कवट्टिं अरिट्ठ नेमिं नमं सामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, य वंदिया जिण वरा चउव्वीसं ॥ परमट्ठ निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २२

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि का उस्सग्ग ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछे संडासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वादणा निमित्तं मुहपत्ती पडिले हु ? गुरु कहे पडिलेएह ॥ मुहपत्ती पडिले है पीछें वादणा दे तिनका विधि कहते है ॥

॥ अवग्रह के बाहिर उंभा हूआ आधा नीचा नम कर इच्छामि खमासमणो वदिउ जावाणिज्झाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्ग्ह. इत ना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हुआ निसीहि कह के कछुक अवग्रह में प्रवेश करे कें संडासा प्रमार्ज्जन कर कें उक्कड बेठ कें डावे हाथ में मुहपत्ति ले कें डाबे कानसे ले के जिमणा कान पर्यंत निल्लाढ पूजी, मुहपत्ती आगें रख कें तिस के मध्य भाग में गुरुचरण की कल्पना कर कें ॥ अहोकाय इत्यादि आवर्त्त कर कें कछुक नीचा नम कर मस्तकें

अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खम णिज्भो भे किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछें फेर ॥ जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खड़ा होके पीछें पग सें भूमि पूंजता हुआ अवग्रह से बाहिर निकल कें स्वस्थान पर आवे. यहां ॥ आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहै, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसी हिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्भो भेकिलामो ॥ अप्पाकिलंताणं बहु सुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्भं च भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवासि आए पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए आसा- यणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किं चि मिच्छाए मणदुक्क डाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए सव्वकालिआए, सव्व मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ,

तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणे आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयं राइओ वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीओ वइक्कतो, पक्खीयेंपक्खो वइक्कतो संवच्छरीयें संवच्छरोओवइक्कंतो ॥ एसी तरें पाठ कहेना ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोउ इच्छं ॥ आलोएमि. जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियं के ठिकाने राइयं कहेना ॥

॥ पीछै रात्रि सबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहते है ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवी काय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण

वनस्पति काय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचें द्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चारे गति के चोरा शी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतांप्रत्यें भलो जाण्यो होय, ते सव्वे हुं मन वचन काया यें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्ता दान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्व-शल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें भलां जाण्यां होय, ते सव्वे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्म की आशातना करी होय। पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्री कथा, भक्तकथा करी होय. और जो कोई पाप परनिंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्यु होय सो सर्व मन, वचन, कायाये कर कें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणा मे आलोउं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहा प्रभात के पडिक्कमणेमें दिवस के ठिकाने रात्रिका पाठ कहेना ॥ इति ॥ २८ ॥

पीछे सव्वस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इच्छाका० ॥ भ० ॥ ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछे इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कड कह के सडासा प्रमार्जन कर कें आसन पर बैठ कें जिमणा गोडा उचा रख कें डाबा गोडा नीचे कर कें ऐसें कहे कि भगवन् ! सूत्र भणुं ? तब गुरु कहे भणेह ॥ पीछे इच्छं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते ॥ भण कें इच्छा

मि पडिक्कमिउं जो मे राइओइत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तं च गरिहामि पर्यंत वंदित्तु सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीछे खड़ा होके अभ्भुट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

वंदितु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठाय परठा,

उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणु व्वयाण, गुण-व्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिरक्खाणं च चउण्ह, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईओ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ॥ ९ वह बंध छविच्छेए, अइ भारे भत्त पाण वुच्छेए ॥ पढमं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलिअ वयण विरईओ ॥ आयरि अमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईओ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयंमि,निच्चं परदारगमण विरइओ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं, चममि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगे-

णं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे० ।१८। गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ॥ वुड्ढिसइअं-तरद्धा पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ॥ उवभोग परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लक्ख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणं, कम्मं निल्लछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कट्ठे मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणूवट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रस गंधे ॥ वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे०॥ २५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते ॥ दंडंमि अणट्ठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे

॥ २७ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥ देसा वगा सियंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथा रुच्चार विही, पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ दुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणन दोसेणव, तं निंदे त च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु सविभागो, न कओ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ सते फासु अ दाणे, तं निंदे त च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसस पओ गे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्झ मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइ ॥ आरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्खागा, रवेसुसन्ना कसाय दडेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे- ॥३५॥ सम्मद्दिठी जीवो, जइ विहुपाव समायरे किंचि ॥ अप्पो सिहोइ बंधो, जेण न निद्धंधस कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपाडिक्कमण, सप्पारिआवं सउत्तरगुण च ॥ खिप्पं

उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्झो ॥३७॥ हा विसं कुठगयं, मंत मूल विसारया ॥ विज्झा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरु सगासे ॥ होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ भरुव्व भारवहो ॥ ॥ ४० आवस्सएण. एएण, सावओ जइवि वहुरओ होइ ॥ दुक्खाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा वहुविहा, नयसंभारिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवालि पन्नत्तस्स ॥ अप्भुठिओमि आरा, हणाए विरओमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहु० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए ॥ चउवसि जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मेदिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठी देवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, कि-

च्चाण मकरणे पडिक्रमणे ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४६ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुंगछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडि क्कंतो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० इति ॥ ४९ ॥ इहां प्रभात के पडिक्कमण में देवसि के ठीकाने राइयं कहना ॥

पीछें दो वादणा दे कर अबभुटमाढिथक्रोज कहे ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ अप्भुट्टिओमि अभ्भितर ॥ गइय खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संडासा प्रमार्जन पूर्वक गोडाली बैठ के, वे गाह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वाम हाथ मूं मुखे देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्भुट्ठिओ ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अप्भुट्ठिओमि अभ्भि तर देवसिओ खामेउ ॥ इच्छं खामेमि देवसिय जंकि चि अप्पत्तिय ॥ परप्पत्तिय भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे

आलावे संलावे उच्चारासे समासणे अंतरभासाए उवरि भासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुम्भे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि दुक्कडं कहे. पीछे पे वांदणां देई भूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसे अवग्रह बाहिर आय कें आयरिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहमीए कुल गणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस समण संघस्स, भगवओ अंजलि करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मो निहिअ निअ चित्त ॥ सव्वं खमा वइत्ता खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछे करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्त

करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थु० ॥ कहि के काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग में श्री वीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीस नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिके प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छट्टे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही ने वांदणां देई सकल तीर्थ नाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्र स्फुटमणि किरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्री मत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरु शृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते वक्खारे कूट नंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ चैत्र शैले विचित्रे यमक गिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्री शैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके

वा, सम्मेते तारके वा कुल गिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्ण शैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकटे चित्रकूटे, त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्राविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरा पत्तने चौज्जयिन्यां, कौशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भादिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ० ॥ ८ ॥ "श्री मन्मेरौ

कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंवुवृच्चे, चौज्झन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंडले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवंति त्रिभुवन वलये यानि चैत्यालयानि " ॥ ६ ॥ इत्थं श्री जैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणा , प्रोद्यत्कल्याण हेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रि संध्यम् ॥ तेषा श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवाना, कार्याणा सिद्धिरुच्चैः प्रमुदित मनसा चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥इति चैत्य बंदन संपूर्णम् ॥ इति ॥ ३२ ॥

पीछे गुरुमुखें पच्चक्खाण करि कें ॥ इच्छामो निसट्टियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछें णमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, भवसागर वारितरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥

निरुद्ध संसार विहारकारि, दुरन्तभावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेह कारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामल वारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल भरलोभालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवा से हारनीहासे ॥ अविरलभविकारागार विस्थित्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मंगलं देविसारम् ॥ ४ ॥ ॥ ३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, इति सो लिखते हैं ॥

अथ संसार दावा स्तुति ।

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली हरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमोगाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला

लोलधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला, झंकारा रावसारा मलदलकमलागारभूमीनि वासे ॥ छायासंभार सारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे वाणीसंदोहदेहे भव विरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

इत्यादि तीन गाथा भणी, शक्रस्तव कहे. पीछे खडा होकर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्ग ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नत्थु० इत्यादि पाठ कहि के ॥

काउस्सग्गमांहे एक नवकार चितवी ॥

एक श्रावक प्रथम काउसग्ग पारी नमोर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ।

अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ प्रह ऊठी भणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमाहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीछे णमो अरिहंताणं कहि के काउस्सग्ग पारे ॥ इसतरे आगे पण जाणणा ॥ पीछे लोगस्स कहे ॥ सव्वलोए अरिहंत चेई-

आणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउसग्ग करी पारिके दूजी स्तुति कहे सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ढ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी रुचक कुंडल सुखठाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछैं पुरकरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवओ० वंदण० अन्नत्थू० ॥ कही एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं।

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग छ छेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षट् द्रव्य सप्त पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सर्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछैं सिद्धाणं बुद्धाणं० कहकें वेयावच्च गराणं० ॥ अन्नत्थू ० कही ॥ एक नवकारका काउसग्ग करी पारि कें णमोऽर्हत्सिद्धा० कहकें चौथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं।

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहुसंघना संकट दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥४॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछें नीचा बैठ कें णमोत्थूणं० कहि कें ॥ तीन खमासमणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सव्व साधु वांदे ॥

॥ अथवा कोई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें मुहपत्ती देई अड्डाइज्जेसु कहे है सो लिखते हैं ॥ इति समदाय ॥

॥ अथ अड्डाइज्जेसु ॥

॥ अड्डाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंच महव्वयधारा ॥ अट्ठारहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायार चरित्ता ॥ ते सव्वे ॥ सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन वखत देई ॥ इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् ॥

चैत्यं वंदन करुंजी. यह पाट कह कर चैत्यवंदन करे. सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भविजन हितगामी ॥ जय जय इंद नरिंद बृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गतजामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमधरं स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुंकाल में, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं चिनाम तित्थं० नमो त्थुणं जावंति चेइआ जावंत केवि साहू०॥ ओर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि के सीमंधर जीका स्तवन कहे सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

श्री सीमंधर साहिबा वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ केवल ज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भा-

सक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चद्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमल पिंजर वसे, मुन मज हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उद्धारण छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लाल रे कहे जिन हर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पीछे जयवीयराय० वंणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थु कहि के ॥ एक नवकारका काउसग्ग करे ॥ पारि के नमो ऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते है॥

॥ महीमंडणं पुण्णसोवन्न देह, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महाणंदलच्छी बहु बुद्धी रायं, सुसेवाम सीमंधरं नित्थरायं ॥ १ ॥ इमहीज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजी का चैत्य वंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनु चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नद सिद्धाचल मंडण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहडण ॥ जय

जय साधु सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर ॥ जयं जयं जगे दानंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुझ पद पंकज प्रीति धर, नि शि दिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतित्थं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंतिं चेइआइं० जावंत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन केह सो लिखते हैं ॥२६॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे ॥ धन्य भाग्य हमारां ॥ विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोटो, क हेतां न आवे पारा ॥ रायणरूख समोसरया स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ध०॥१॥ मूलनायक श्री आदि जिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हूं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरां ॥ पतित उद्धारण विरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्ति से प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारां ॥ जात्रा करि भवि जन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे

॥ ध० ॥ ॥ ४ ॥ संवत अढारे न्यासी मास आषाढें, वदि आठम भोमवारा ॥ प्रभुके चरण परतापसिंह में क्षमा रतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध ॥ इति ॥

॥ पीछे जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थु० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्गकरी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें ॥

॥ शेत्रुंजागिरि नमियें, ऋषभदेव पुंडरीक ॥ शुभ तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरबीक ॥ शुद्ध मन उपवासे, विधिशुं चैत्यवदनीक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पडिलेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ पडिलेहण संदिस्साउ ? गुरु कहेसंदिस्साएह ॥ वीजे खमासमण ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ इमहीज दोई खमासमणे अंग पडिलेहण संदिस्साउं ॥

अंगपडिलेहण करुं. कहीके धोतियुं कणदोरो पडिलेहि के ॥ खमासमण देई इच्छाकार भगवन् पसाउ करी पडिहण पडिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पडिलेह रखे, अने जो गुरुआदिक थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीछे खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहि ॥ दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ ओहि पडिलेहण संदिस्साउं ॥ ओहि पडिलेहण करुं ॥ एम कही कंवल वस्त्रादि पडिलेहे ॥ पीछें पोषधशाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोभी दृष्टिपडिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबभी प्राये एही करते दिखते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हें ॥

॥ पीछें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायव्वो,

पीछे यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इच्छाकारे० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊभो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोडालीयें वेसी मस्तक नमावी ॥ भयवं दंसणभद्दो ॥ इत्यादि गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयव दसणभद्दो ॥

॥ भयवं दसएण भद्दो, सुदंसणो थूलिभद्द वयरोय ॥ सफलीकयगिहचाया, साहू एहं विहा हुती ॥ १ साहूण वंदणेणं, नासइ पाव असंकिया भावा ॥ फासु अदाणे निज्झर, अभिगहो नाण माईण ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढ मणो, कित्तिय मित्तपि संभरइजीवो ॥ ज च न संभरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वा याइ भासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहस, ट्ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो वोधव्वो, सेसो संसार फलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायि क विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करता अविधि आशातना लगी होय. दश मनका, दश वचनका वारह काया का, वत्तीस

दूषणमांहि जो कोई दूषण लगा होय. सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारि कें, पीछें पडिलेहण करे, इहां यथा योग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछे ॥

॥ दूसरा खमासमण देवे, श्री जिन पति सूरि जीकी सामाचारी में एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणाविधि ॥

॥अथ संध्याकाल सामायिकविधि लिख्यते॥

॥पिछले पहोरें धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहह. इच्छं कहीं ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० सामायिक संदिस्साउं? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फि-

खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक उ ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार भवन् ! पसाओ करी सामायिक दंडक उचरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछे करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई । इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिकमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडिकमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मुखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बेठ के मुहपत्ती पडिलेहि वांदणा देई कहे. इच्छाकार भगवन् ! पसाओ करी पच्चक्काण करावोजी. पीछें गुरु दिवस चरिम पच्चक्काण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्ष अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चक्के अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चक्काण करे ॥ वांदणा न देवे, अने जो च

उव्विहार उपवास हुवे, तो पच्चक्खाण करवुं छे नहीं ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछैं एक खमासमण देइ इच्छाका० ॥सं०॥ भ० सिज्झाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछैं इच्छं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछे इच्छ कही ॥ खमासमण देई ॥ उभो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्झाय करे ॥ पीछे खमासमण देई ॥ इच्छा ॥ सं० ॥ भ० ॥ बेसणुं संदिस्सावुं ! गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा ॥ सं० ॥ भ० ॥ बेसणुं ठाउ गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछैं इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पांगरणु संदिसाउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पांगरणु पडिग्घाउं ? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पीछैं इच्छं कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥

चैत्यवंदन करु? गुरु कहे करेह, पीछे इच्छं कही जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें पक्खी तथा चउमासी तथा संवच्छरी के रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनों में तो पांच गाथा पहेले की, और दोय गाथा पिछाडी की, एवंसात गाथा कहेने की मवृत्ति देखणेमे आवे हे. अब जयतिहुअण लिखते है ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जयतिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुरु हाद जिणेस पास थंभणय पुरट्ठिअ ॥ १ ॥ तई समरंत लहंति जत्तिवर पुत्त कलत्तहि, धण सुवन्न हिरण पुण जण भुजहि रज्झहि ॥ पिरखहि मुक्ख असखसुक्ख तुह पासप साइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खहि कुण महजिण ॥ २ ॥ जरजज्झर परिजुण्ण कण्णणट्ठुठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीणखएणखुण्ण निरसल्लिअ सूलिण ॥ तुह जिण सरणरसायणेण लहुं हुंति पुणण्णव, जय धण्णतरि पास महवि तुहुं रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्झाजोइस-मंततंतसिद्धि-

उ अपयत्तिण, भुवणप्भुअ अठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तओवि जण होइ पवित्त-उ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्ग-खग्गरिउवग्गविगंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ गत्थ नि-त्थारइ दय करि, दुरिअइं हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धर सुरवर, रक्खस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचा-रिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ ॥ इयतिहुअणअविलंघि आण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थ अण-त्थहित्थभत्तिप्भर निप्भर, रोमंचं चिअचारुकाय किंणरं नरसुरवर ॥ जसु सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु ७॥ जय जोइ अमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअण-जण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर॥ जय मइमेइणि वारि-वाह जयजंतु पिआमह, थंभणयट्ठिअ पासनाह नाहत्तण-कुणमह ॥८॥ वहु विह वण्णुअवण्णु सुण्ण वण्णिउ छपण-हि, मुरकधम्मु कायत्थकाम नर नियनियसत्थहि ॥ जं

ज्झायइवहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइ अ मण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ६ ॥ भय विप्भल रणऊरिणरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअनयणविसुणसुणगग्गिरगिरकरुणय ॥ तइसहसरिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविज्झविसज्झसइ पास भय पजरकुजर १०॥ पइपासविविअिसंतनित्तपरंतपविच्चिय, वाहपमाह पवूढरूढ इहदाहसुपुलइय ॥ मण्णदिमणूसउण पुणअप्पाण सुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंट टंकारवपिल्लिअ, वल्लरमल्लमहल्लभत्तिसुरवर गंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भवणेहि महूसर, इय तिहुअण आणदचद जय पास सुहुप्भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थसत्थवित्थरिअ पहाभर ॥ कलिकलुसिअ जण धूअलोयलो यणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिसभित्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेहणि ॥ जायइ फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इयमय मेइणि वारिवाह दिसि पास मइं

मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणुं ॥ जय जंतुहजण-णुणातुल्लजंजणि यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास ज-य जंतु पिआमह ॥ १५॥ भुवणारण्णनिवास दरिअ पर-दरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंठुलचिट्ठहिं, इय निहुअण व-णसिंह पास पावाइं पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफु-रंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निल्लुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगं-जिअ, जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणय पुरठिअ ।१७। महमणतरलपमाणनेय वायांवि विसंठलु, नियतणुरावि अ-विणयसहाव आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुण पवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहिविसवंतउ ॥ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणुकिंकिंवनजंपिउ, किं व-नचिठिउ किठदेवदीणयमाविलंविउ ॥ कासुनकियनिप्प-ल्ललल्लुअम्होहिंदुहत्तइं, तहविन पत्तउताण किंपि पइं पहु परिच-तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुंहु मित्त पियंयरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुहिज जाण तुहुं गुरु खेमंकरु॥

हउं दुह भरभारि अवराउ राउल निप्भगगउ, लीणउ तुह कमक मल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइकि वि-कयनी रोयलोयकिविपावियसुहसय, किविंमइं मंतमहंत केवि किवि साहियसिवपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गके विज सधयलिअ भूअल, मइं अवहीरहिकेणपाससर-णागयव च्छल ॥ २१ ॥ पच्चुवयार-निरीहनाहनिप्पण पयोअण, तुहं जिण पास परोवयार करुणिक्क परायण ॥ सत्तु मित्त सम चित्त वित्तनयनिंदअममण, माअवहीरिअजुग्गउवि मइं पास निरंजण ॥ २२ ॥ हउं बहु विहदु हयत्तगत्ततुहु दुहनास णपरु, हउ सुयणहकरुणिक्कठाण तुहं निरुकरुणाकरु ॥ हउं जिण पासामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवही रहि मइं ऊखतइस पामन सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गा जुग्ग विभागनाहनहुजोअणतुहसम, भवणुवयारसुहावभाव करु णारससत्तम ॥ समविसमय किघणनपइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधव पासनाह मइं पाल थुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदी णहदीणयमुपवि अणविकिविजुगय, जं जेइयइवयारुकर इवयाम्सत्तुज्झाय ॥ दीणहदीणग्निहीणजेणतुहनाहिणच

त्तउ, तो जुग्गउ अहमेव पासपालहिमाइं चंगउ ॥ ५ ॥ अहअणविजुग्गयविसेसकिविमणहि दीणह, जं पास त्विउ वयारुक्करइ तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणु जण जिण तुम्ह पसीयह, किं अणुंण तंचेव देव मामइं अवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थणा नहु होइ विहल जिण जाण उ किं पुण, हउं दुरकिउ निरुसत्तचत्तदुक्कहु उस्सुय यमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविज्झाइ लप्भ, सच्चं जं भुरिकयवसेण किं नुंवरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइंअप्पप यासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुन मुणंवहुं जंपिउ ॥ असण जिणजगतुहसमोविद रिकणदयास उ जइ अवगिणसि तुंहिजअहहकिंहोइसहयासउ ॥ २८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलंविउ, तउजाणुंजिण पास तुम्ह हउं अंगीकरिअउ ॥ इयमहइत्थिअ जं न होइ सातुहओ हावण, ररकंतह नियकित्तिणे य जुज्झइअवहीर णा ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहुसअ, जं अ; णलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअ णिसिद्धउ ॥ इय मइं पसियसुपासनाहथंभण यपुरट्ठिअ, इय मुणिवरसिरि अभयदेव विणवइ आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनक तीर्थ राजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

पीछें जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥
अथ जय महायस प्रारंभ ॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समत्थ परमत्थजाणय, जय जय गुरु गिरिम गुरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थंभणयट्ठिय पासजिण ॥ भवियह भीम भवत्तु, भव अवग ताण त गुण ॥ तुऊत्ति संज नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

पीछें शक्रस्तव कह कें खडा हो कर अरिहंत चेइयाण० करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्ति आए० अन्नत्थू० इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

अथ महावीर जिन स्तुति प्रारंभ ॥

सूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिन दिन सुखदायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान १ ॥

ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने. पीछें णमो अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारे. इसी तरें आगें पण स्तुति की चारों गाथामें जान लेना.

पीछें लोगस्स कह कर सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं वंदणवत्ति० ।' अन्नत्थू० कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करे. पारि कें उक्त स्तुति की दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणने तारे, भवहरण सम निशिदीस ॥ चोवीशं जिनवर, प्रणमुं विशवावीस ॥ २ ॥ यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे. पीछें पुरकरवरदी० वंदणवत्तिआए ० अन्नत्थू० कहि कें एक नवकार का काउस्सग्ग कर कें, पारि कें उक्त स्तुति की तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

अरथें करि आगम, भांख्या श्रीभगवंत ॥ गणधर ने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र

सिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्च गराणं अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग पारी उक्त स्तुति की चौथी गाथा कहे सो लिखते हैं ॥

सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु सकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोडी, सेवें सुर नर इंद्र ॥ जंपे गुण गण इम. श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥४॥ इति महावीरजिनस्तुति ॥ यह चोथी स्तुति कहि कें बैठ कें नमोत्थूण कहे. पीछे एक खमासमण देईकें श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. पीछें श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमण दे कर श्री वर्त्तमान आचार्यजी का नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमण में सर्व साधुजी मिश्र इसी तरें कह कर गोडा लीयें बैठ कें मस्तक नमावी सव्वसमवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि दुक्कड कहे, परंतु ' इच्छाकारेण सदिस्सह इच्छं ' ए पद न कहे ॥

पीछें खडे हो कर करोमि भंतेसामाइय० इच्छामि ठामि काउस्सग्ग जो मे देवसिओ० ॥ तस्सुत्तरि० अन्नत्थु० ॥ इत्यादि कहि कें, आठ न वकार का काउस्सग्ग

करे. काउस्सग्ग माहे आजूना चउ प्रहर में ॥ इत्यादि पाठ मन में चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

पीछैं संझासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछैं मुहपत्ती पढिलेहि कें वांदणां देवे. पीछैं अवग्रहमांहिज उभो थको इच्छा० ॥ सं० भ० देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह, पीछैं इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अतिचार आलोवे. पीछैं सव्वस्सवि देवसियं इत्यादि थी मांडी ने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडिक्कमह. यह पाठ कहे॥

पीछैं इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहि कें संझासा प्रमार्ज्जि प्रमार्जित भूमियें आसन पर बैठ कें भगवन् ! सूत्र भणुं ऐसा कहे. तब गुरु कहे भणेह. पीछैं इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भंते भणी ने इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछैं खड़ा होकर अब्भुट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो

वांदणा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खड़ा हुवा इच्छा० ॥ स० भ० अप्भुट्ठिओमि अप्भितर देवसियं खामेउ ? गुरु कहे, खामेह ॥

पीछे इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोडालीये वैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछै विधि सेंती दो वादणा दे कर आयरिय उवझाय इत्यादि त्रण गाथा कहि के करेमि भंते सामाइयं इच्छामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थु० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करि पारि कें पीछें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही. सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थु० कहि के एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तं पुक्खरवरदीवड्ढे, कहि कें सुयस्स भगवओ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थु० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें पारिकें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे पीछे सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नच्छू० कही एक नव-

कारनो काउस्सग्ग करे. पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारि कें णमो अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवें तो, गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुत देवता का स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद् द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, महेश श्रुतसपदम् ॥ १ ॥ पीछें खित्त देवयाए, करेमि काउसग्गं० ॥ अन्नत्थु० कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परें क्षेत्र देवताकी स्तुती कहे, सो लिखते हैं ।

॥ अथ क्षेत्र देवताकी स्तुती ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञों साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्र देवताः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पीछें खडा हुआ एक नवकार कही, संडासा प्रमार्जि उकडू बैठ कें छट्ठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेहेह ।

पीछैं मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वादणां देः उवरकनक कहे, सो लिखते हैं ।

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ उवरकणय संख विद्रुम मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाण, सव्वा मर पूइय वंदं ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ उं भवणवय वाण मतर, जोइसवासवि माण वासीय ॥ जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वें उवसमतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पच्चक्खाण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसत्थो पडिक्कमणा, वादणा, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण छ आवश्यक साधता कानो, मात्रा, उछो अधिको अक्षर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वेमन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इच्छा मो अणु सट्ठिं० ॥ कही बैठे. पछिं गुरु स्तुति कह्या पीछें श्रावक समस्त, मस्तकें अजलि करिकें णमो खमासमणाणं ॥ णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्या दि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाण कही ससार दावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोद्गत ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढ भृङ्गीकुरङ्गं, मुख शशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्त्ति ॥ विकच कमलमुच्चैः साऽस्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीछें णमोत्थूणं० कहि कें. एक श्रावक खमासमण देई कहेः— इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन सांभलु ? गुरु कहे, भणह सांभलह पीछैं आसन पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहिकें बडो स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

भविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ श्री ० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका कांई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहिं तिहा तत्त्व पिछाणे रे ॥ भ ० ॥ श्री ० ॥ ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक ॥ विविधपरें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक ॥ भ० ॥ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोता, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ भ ० ॥ श्री ० ॥ ४ ॥ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पाचमा अंगें जिन प्रतिमानो, प्रगटपणें अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, रायपसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरो-

डी, करियें कम अकाज रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सम-
कितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगं ॥ जो जो
एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगं रे ॥ भ० ॥ श्री०
॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर
राखी ॥ द्रव्य भाव विहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते
साखी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम
साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित
नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥१॥०
चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्री
जिनलाभ सुगुरु उपदेशें श्री जिनचंद्र सवाई रे ॥ भ० ॥
॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन-
म् ॥

॥ पीछैं तीन खमासमण आचार्य, उपाध्याय, सर्व्व साधु वांदी, अड्ढाइज्जेसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छा का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं काउसग्ग करुं ? गुरु कहे करेह. पीछे इच्छं कहि के देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्ग अन्न० कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्स का काउस्सग्ग करे पारी कें लोगस्स कहे.

पीछें खमासमण देकर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उडावबत्थ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्न-त्थ ॥ इत्यादि कही शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउसग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछे खमासमण देई ॥ सज्झाय करुं ! तीन नवकार गुणीजे. पीछे खमासमण देई के ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थभणा पार्श्वनाथजी का चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजी का चैत्यवंदन

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरो, श्री पूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशै समारोपित ॥ ससिक्त स्तुतिभिर्जलैः शिव फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्प तरुः समे प्रथयता नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरो देवो जीरावल्ली शिरोमणि ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछें नमोत्थुणंमे लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी ' गिरि थंभणय

ट्ठिय पास सामिणो० ' इत्यादि दोय गाथा कहे सो लिखते हैं.

॥ अथ श्रीथंभयट्ठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभणयट्ठियपाससामिणो सेस तित्थ सामीणं ॥ तित्थ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ भत्तीए गुण सुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खडे हो के वंदण व ० ॥ अन्न ० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि के पीछें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ ॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू ०

कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग करे. पीछें मगट लोगस्स कहि बैठ कें डावो गोडो उंचो करि कें खमासमण देई कें, इच्छा०॥ स ०॥ भ ०॥ चैत्यवदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पडिमल्लूल्लूरण, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिद्धउ सोहइ फणमणि किरणालिद्धउ ॥ नंनव जलहर तडिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिय ॥ ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वोमंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछै नमुत्थूणंसे ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि कें, पक्खी, चउम्मासी अरु संवच्छरीके रोज तो बडी

शांति सुणे, परंतु और दिनों में छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

अथ लघुशांतिस्तवः ।

शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्यो पयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा

शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयात् ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननी सत्त्वानाम् ॥ अभय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्ताना जन्तुनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग्दृष्टीना धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर दुष्ट ग्रह राज रोगरणभयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिभ्य ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांति च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टि कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वं मे ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशा, तितुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ ओमिति नमो नमो हाँ, हीं हूँ ह यः क्ष ही फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाक्षर, पुरस्सर संस्तुती जया देवी ॥ कुरुते शान्ति नमता, नमो नम शांत ये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मन्त्रपदविदर्भितः स्तवः शाते । सलिलादिभय विनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्ति मताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा शृणोति भाव-

यति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं या यात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्ग्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्न तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां,जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीछैं चीराकका अथवा बीजली का चांदणा पड़ा होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछैं प्रगट लोगस्स कही पूर्व ली परें सामायिक पारे. पीछैं एक स्तवन दादाजी का कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलाविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसम गौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्य-म् ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां स्वाध्यायध्यानसंयमरता-नाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेह महासह ॥ नवखंडा भिधं पार्श्वं सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिलिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः; भवजल निधिपोत सर्वसंपत्तिहेतु स भवतु सततं व, श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्री पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वंसी वंदनादिच्छितप्रदः ॥ पूजना त्पूरकः श्रीणा, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाल लोचनम् ॥ नरामरेंद्रै स्तुतपादपंकजं, नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ शांतिजिनस्तुति ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांति, अतिशय अभिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरपति कुलचंद ॥ मृगलंछन धर पदकमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंडित आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोडि कल्याण ॥ ४ ॥ इति श्री शांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ मह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहितउदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशि दिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्री नेमिनाथ० ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण

कलप साख, वामासुत सार ॥ श्री गोडीं पुर स्वामि, नाम जपियें निरधार ॥ त्रिभुवन पति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥वदू जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥ अथ पाक्षिकादि पडिकमण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पडिकमी॥ ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइय पडिकंता ॥ इच्छा० स ० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुहपत्ती पडिलेहु ? चउमासीए चउम्मासिय मुहपत्ती, संवच्छरीये सवच्छरी मुहपत्ती पडिलेहुं ॥ एम कहे, पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥

पीछें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही,
वांदणां देई तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चउमासी
पडि० ॥ चउमासीओ वइक्कंतो संवच्छरीमें संवच्छरो व-
इक्कंतो. एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो
देवसीने स्थानकें पाक्षिक ॥ चउमासिक सांवच्छरिक भ-
णजो. छींक जयणा करजो. मधुर स्वरें पडिक्कमजो,
खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांडलमें सावचेत रहेजो.
पीछें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें ऊठी ॥ इच्छाका० ॥
॥ सं० ॥ भ० ॥ संबुद्धा खमाणेणं ॥ अप्भुठिओमि अ-
प्भितर पक्खियं ॥ २ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥
पीछें मस्तकें अंजलि करतो थको, इच्छं खामेमि पक्खियं
॥ ३ ॥ कही, गोडा लीयें वेसी मस्तक नमावी दक्षिण
हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्खियें प-
नरसह्नं दिवसाणं पनरसह्नं राईणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥
इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउह्नं मासाणं अट्ठह्नं प-
पक्खाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥
इत्यादि कहे. संवच्छरीयें दुवालसह्नं मासाणं चउवीसह्नं
पक्खाणं तिन्निसयसट्ठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं

इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिच्छामि दुक्कडं कह ॥ तिहा दोय साधु उचरता हुवे तो पाखियें तनि, चउमासीयें पाच, संवच्छरीयें सात साधुने खमावे ॥ पछें उठी अवग्रहमाहि रह्यो कहे ॥ इच्छा ० ॥ सं० ॥ भ ० ॥ पक्खियं आलोवुं? गुरु कहे आलोएह ॥ पछें इच्छं आलोएमि, जो मे पक्खिओ ॥ २ ॥ अइयारोकओ, इत्यादि सूत्र भणी ॥ संक्षेपें अथवा विस्तारें पाखी चउमासी सवच्छरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते है ॥

अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ।

नाणंमि दसणंमिय, चरणंमि तवेय तह यविरियंमि॥ आयरण आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५, एव पाच विधि आचारमाहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, बादर, जाणता अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुक्कड ॥

अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार।

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥
वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥

ज्ञानः—कालवेलामांहि पढिउं गुणिउं नहीं, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नहीं पढिउं, अथवा अनेराकने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें वीसार्यो, तपोधन तणे धर्म काजो अण ऊधरे दांडो अणपडिलेही, वसती अणसोधी, असिज्झाई अणोझा कालवेलामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडी वहीदस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लागो थूंक लागो ओसीसे मूक्यो कनें छतां आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो,

छती शक्ते सार सभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणता गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपराध कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोई तोतलो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अणेरिय ज्ञानाचार विपर्ईओ जिको अतिचार पक्ष दिवस माहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणता, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइ करीमि० ॥

दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं, सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं. चारित्रिया साधु साधवी तणां मलमलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो. संघमाहे गुणवंत

तणी अनुपवृंहणा आस्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीकरण वात्सल्य शक्ति छतें प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिओ, विणसंतुं उवेखीउं छती शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रें देव पूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूंपी कलश तणो ठवको लागो, मुखतणी वाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पडीउ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकारवाली नें पग लागो, दर्शनाचार विपईओजिको अतिचा०॥ २ ॥

॥ चरित्राचारना आठ अतिचार ॥

पणिहाणजोग जुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भासासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिक्खवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिट्ठावणीयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति रूडी परें

पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिकमणे लीधे अष्टविध चरित्राचार विपईओजिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेपतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्रीसम्यक्त्वतणा पांच अतिचार,–संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संका –श्रीअरिहंत तणा वल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गाभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियाना चारित्र जिन वचन तणो संदेह कीधो. आकान्ताः–ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्र देवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जू जूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आतंकें इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराइ दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या. कुशास्त्र शीख्यां, साभल्या, शराधसंवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजापडिवो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपंचम भूलणाछठ शीलसातम श्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सवारस च-

नेतरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारण कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां थाप्यां, अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. वितिगिच्छा:-धर्म संबंधिया फल तणो संदेह कीधो, जिण अरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधि देव बुद्धे शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या, महात्मा ना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुओ मिथ्यात्वी तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमकितविषे अनेरो जिको आतिचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहूमन, कायाइं करी मिच्छामि ० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाण वुच्छेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बं-

यन रांध्या, घणे भारे पीड्या, निर्लाछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार संभार न कीधी, लाहिणे देणे क्रिणहीप्रतें लघाव्युं, तेणें भूखें आपण जिम्या, अणगल पाणी वावरयु, रूडे गल्युं नहीं, गलाव्युं नहीं, अणगल पाणी जील्या लूगडां धोया, इधण अणसोध्यु जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिडा साहता मूआ, दूखव्या, रूडे थानक न मूक्या, कीडी मकोडी उदेही घीवेली कातरा चूडेलीपतंगिया डेडका अलसिया ईली कूति भ्रांसमसा वगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणटा चांपिया दूहव्या माला हलावता पखी काग चिडकलाना इंडा फूटा, अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चाप्पा, दूहव्या, हालता चालता अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधु. जीव रक्षा रूडी न कीधी, संखारो सूकव्यो, सुल्याधान तावडे दीधां दलाव्या, भरडाव्या खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी मार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या

धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसात्कारः किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें; तो राजविरुद्ध चिंतवो छो. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणही नें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर माय भूमि संबंधिया लहणों देयणों व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं झुठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

त्रीजे अदत्तादानाविरमण व्रतना पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पओगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अण-

मोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत मतें संबल दीधु, संकेत कह्युं, विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा खोटे तोल मान वहोरया, दाणचोरी कीधी साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वची जूदी गांठ कीधी, किण-हीनें लेखे पलेखे भुलव्युं पडी वस्त ओलवी लीधी त्रीजे अदत्तादान व्रतविपइउ० ॥

॥ चौथे स्वदार संतोष मैथुनव्रते पाच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग विवाह तिव्वअणुरागे ॥ अप रिगृहीतागमन, इत्वर परिगृहितागमन विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन वोल्या, आठम चउदस अनेराई पर्व्व तिथि तणा नियम भांगा, घर घरणा कीधां, कराव्यां, अनु मोदीया, कुविकल्प चितव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोडया, काम भोगतणेविषेतीव्राभिलाप कीधो, कुस्वपन लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधु, चोथे मैथुन व्रत वि०

पांचमे परिग्रह परिमाणव्रतें पांच अतिचार ।। धण धन्न खित्त वत्थू ।। धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्य सुवर्ण कुप्य द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्च्छालगें संक्षेप न कीधी, माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधी, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ।। पांचमे परिग्रह परिमाण व्रतविषइओ० ।।

।। छट्ठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ।। गमणस्सय परिमाणे ।। ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणा नियम जे कोई आजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आघी मोकली ॥ छट्ठे दिग्व्रत वि० ।।६।।

।। सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ।। जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करम हूंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार ।। सच्चिते पडिवद्धे, अपोल दुप्पो लयं च आहारे० सच्चित तणे नियम लीधे अधिक सच्चित लीधुं, तथा सच्चित मली वस्तु अपक्वाहार दुपक्वाहार तुच्छौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला

उंबी पहुंक काकडी भदथा कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भ-
क्षण कीधां ॥ सच्चित दव्व विगई, पालह तंबोल वत्थ
कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि एहाण' भ-
त्तेसु ॥१ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभारया संक्षेप्या
नहिं, लेई नियम भाग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंत-
कायमांहि आदुं मूला गाजर पींदालू सूरण सेलरा काची
आवली गोल्हा खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोल
नी रोटी खाधी त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, मधु महुडा मा-
खण माटी वेंगण पीलू पीचू पंपोटा पींपी विष हीम कर-
हा घोलवडां अणजाण्या फल टींबरु अथाणुं आमणबोर
काचुं मीठु, तिल खसखस काचा कोठिंबडां खाधा, रा
त्रिभोजन कीधुं, लगवगतीवेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उ-
ग्या विण शिराव्या तथा पन्नर कर्मादान इगालि कम्मे,
वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणि-
ज्ये, लख्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केशवाणिज्ये, विष
वाणिज्ये, जतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदाव-
णया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए
पांच वाणिज्य पाच कर्म्म, पांच सामान्य, महारंभ ली-

हाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोप्या, अनेरुं जे कांई वहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० कंदर्प्प लगें विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरख पणा लगें कुणहीने असंवद्ध वाक्य वोल्या. खांडा कटारी कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अंघोलनाहण, दांतण पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन वोल्या, करडका मोडया, संभेडा लाया, भेंसा सांढ कुकडा, मिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अ-

देखाई चिंतवी माटी मीठुं कण कपासिया काजविए चांप्या, तेह उपर वयठा, आळे वनस्पति खुंदी, छास-पाणी विरस तेळ गुल आम्लवेतस बेरजादिक तणा भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडी कंथुआ माखी उंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव कीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकने रुद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्यु, वचन सावद्य वोल्युं, काय अणपडिलेह्युं हलाव्यु, छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुखे वोल्या, ऊंघ आवी कीधी, वत्ति दीवा तणी उजाही लागी. कण कपासीया माटी मीठुं नील फूल हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अणपूरउ पारिउ, पारउ वीसारिउ, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आ-
णवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे स-
द्दाणुवाइ रूवाणुवाइ वाहिया पुग्गल क्खेवे ॥ नियमित
भुमिकामांहि वाहिर थकी कांई अणाव्युं, आप कन्हाथी
वाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी
आपणपणुं छतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतवि-
षइयो ० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ सं-
थारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअण भोए ० ॥ पो-
सह लीधे संथारा तणी भूमि वाहिरला थंडिलां दिवसें
शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपाडिलेह्युं वावरिउं,
अणपुंजी भूमिकाइं परठाविउं, परठवतां चिन्तवणा न की-
धी, अणुजाणह जस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पूठें वार
त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशालामांहि प-
इसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृ-
थ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय त-
णा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरासि तणी
विधि भणओ वीसारिओ. पोरासि मांहि उंघ्या, अवधि

संथारुं पाथरयुं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधउ, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व्व तिथि आवी पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पाच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेंडी असूझतुं कीधुं, आपणु फेडी परायु कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मच्छरलगें दान दीधु, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं अनेराइ धर्म्म चेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धरया नहीं बारमे अतिथि संविभाग व्रत विषइयो० ॥

सलेहणा तणा पांच अतिचार, इहलोए, परलोए०॥ इहलोका ससप्पओगे परलोगासंसप्पओगे जीविआसंसप्पओगे मरणासंसप्पओगे कामभोगासंसप्पओगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई बुलदेव

वासुदेव चक्रवर्त्ति पद वांच्छयां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीववा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवा तणी वांछा कीधी कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाननतावि० ॥

तपाचार वारभेद ॥ छ अभ्यंतर, छ वाहिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहियें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्तें कीधुं नहीं. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नहीं, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमड्ढ एकासणो वेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चखाण पारवां वीसारयां. वेसतां नवकार भएयो नहीं, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ वाह्य तपव्रत विपइयो० ॥

अभ्यंतर तप ॥ पायच्छित्तं विणओ० गुरु कनें मन सुद्धे आलोयणा लीधी नहीं, गुरुदत्त प्रायच्छित्त तप लेखा शुद्ध पुहचाड्युं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मी प्रतें वि-

नय साचव्यो नहीं, वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झाय कीधी नहीं, धर्म्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यावु नहीं, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विषइयो० ॥

वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलवि· रीओ पडिक्कमइ जो जहुत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थाम नायव्वो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वैयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्य कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणु छतु बल वीर्य गोपव्यु, रूडा पंचाङ्ग खमासमण न दीधा, बेठा पडिक्कमणु कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

नाणाइ अट्ठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु बारस तवविरिअ तिगं, चउवीस सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाण करणे० ॥

जिनप्रतिषिद्ध बावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधा, नित्य कृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थयात्रादिक न

कीधां, जीवा जीवादि विचार सद्दहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र परूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषा वाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्मे श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचारमांहि जिको कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्री श्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार सं०

पीछें सव्वस्सवि पक्खिय ॥ इतियादि इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे चउत्थेण पडिक्कमह. चउमासे छठेण पडिक्कमह. संवच्छरीय अठमेण पडिक्कमह. इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पीछें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, देवसियं आलोईयं पडिक्कंता ॥१॥ पत्तेयखामणेणं, अब्भुठिओमि

अभ्भिंतरपक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं? गुरु कहे खा० ॥ पीछैं इच्छं खामेमि पक्खियं ॥३॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिच्छामि दुक्कडं देई खमावे, पीछे वे वांदणा देई भगवन्? देवसिय आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं ॥३॥ पडिक्कमा वह? गुरु कहे सम्मं पडिकमह. पीछे इच्छं कही करेमि भंते सामाइय ॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही तस्सुत्तरी ० अन्नत्थू० ॥कही ॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांभले. अने गुरुथकी जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. भगवन् । सूत्र भणुं गुरु कहे, भणेह. एसो वचन मनम धारी ॥ इच्छं कही, उभो थको, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखें देई. तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वादित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि भंते ० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे, सूत्रप्रांते णमो अरिहंताण कही. काउस्सग्ग पारी, उभा थका तीन नवकार गुणी बेसे. पीछे ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि भंते कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥

इत्यादि कही, वंदि-तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं। एहने ठिकाणें पडिक्कमे-पक्खियं, चउम्मासियं, संवच्छरियं सव्वं कहे. पछिं उठी, अब्भुठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण भणी, खमासमण देई इच्छा ० ॥ सं ० ॥ भ ० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करूं? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही, करेमि भंते सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू इत्यादि कही, पाखी यें वार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवच्छरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग कर एक नवकार उपर, काउस्सग करी. पारी लोगस्स कहे. बेसी मुह पत्ती पडिलेही, बे वांदणां देई इच्छा ॥ सं० ॥ भ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अब्भुट्टिउमि अब्भिंतर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेउं गुरु कहे खामेह पीछें इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वें कह्यो. तिम कहे पीछें इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ पाखी ॥ ३ ॥ खामणां खामूं ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणा खामेह. पीछें श्रावक एक खमासण देई. मस्तक

नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे इम चार वार कहे, पीछैं गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछे श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुसट्ठि कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखी ने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आंबिल अथवा तीन नीवी अथवा चार एकासणा, अथवा बे हजार सज्झाय करी, एक उपवासनीं पेठे पूरज्यो पाखीनें स्थान कें देव सिक भणजो एम चउमासे ए सव्वे दुगुणो कहणो, संव च्छरीयें त्रिगुणो कहणो पीछैं जिण तप कीधो हुवे ते पइट्ठिय कहे, न कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीछे बे वांदणां देई, अब्भुट्ठिउमि अभ्भितर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे पीछैं बे वांदणा देई आयरिय उवज्झाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि देवसिक पडिकमणानी करें, पण इतरो विशेष है श्रुत देवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, पीछैं भवण देवयाए करेमि काउस्सउग्गं, इत्यादि त्रियें भवन देवता के काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुरितान्यषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्र देवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीन पर्वे बड़ा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवनें उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक्कमणो पूरो हुवां पीछे एक श्रावक गुर्वाज्ञायें नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांति का स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणने रात्रि पोसह न हुए ते पोसह सामायिक पारी सांभले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणाविधि ॥

अथ दस पच्चक्खाणविचार लिख्यते ॥

तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इस तरे पच्चक्खाण करे । उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइओ पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहित्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्त-

रागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥ इति नवकार सी पच्चक्काण ॥ १ ॥

तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगइका ओर देसावगासिकका आगार न पच्चक्के निकेवल नवकारसी आदिक पन्चरकाण करे सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पच्चरकाई॥ चउव्विहंपि आहार असणं पाण खाइमं साइम अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चरखाण ॥ आगार ॥२॥

॥ पोरसी मुठसी पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असण पाणं खाइम साइम अएणत्थ० ॥ सहसा० पत्थएणकालेण दिसा मोहेण ॥ साहुवयणेणं सव्व० विगडउ पन्चक्खामि. इत्यादि पूर्व्व की परें कहणा ॥ इति पोरिसी पच्चक्खाण ॥ ७ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साड्ढ पोरसी का पच्चरकाण जाणना इतना विशेष है, पोरसि पच्चरकाई के ठिकाने इहा साड्ढ पोरसि पच्चक्खाइ कहणां ॥ इति साड्ढ पोरसिंपच्चकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

सूरे उग्गए पुरिमड्ढ अवड्ढ वा पच्चरकाइ, चउव्वि-
हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० ॥ सह०
॥ पच्छ ०॥ दिसामो० ॥ साहु० ॥ मह ॥ सव्व० ॥ वि-
गइउ पच्चरकाई इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमड्ढपच्च-
क्काण ॥ ६ ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साड्ढ पोरसिं वा पच्चक्काइ, उग्गए सूरे
चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण०
सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व एकासणं विआसणं वा
पच्चक्खाइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं
अण० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भु
ट्ठाणेणं पारि० मह० सव्वं० देस। वगासियं० इत्यादि
पूर्व्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसण पच्चक्खाण ॥
आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साड्ढ पोरसिं वा पच्चक्खाइ. उग्गए
सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण०
सह० पच्छणका० दिसा० साहु० सव्व एकासण एग
ट्ठाणं पच्छक्खाइ. दुविहं तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं
खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं गुरुअब्भु

ट्ठाणेणं पारिट्ठाव० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलट्ठाणा पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चक्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार असणं पाणं खाइम सा० अण्ण० सह० पत्थ० दिसामो० साहु० सव्व० आयंबिल पच्चक्खाइ अण्णत्थ० सह० लेवालेवेणं गिहत्थससिठेणं उरिकत्तावत्तेगेण पारिठा० मह० सव्व एकासण पच्चक्खाइ. तिविहंपि आहार असण खाइम साइमं अण्ण० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरु अप्भुट्टाणेणं पारिट्ठा० मह० सव्व० वासिरइ ॥ ६ ॥ इति आबिल पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहपि आहारं असण पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थ० सह० पत्थ० दिसा० साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चक्खामि. अण्ण० सह० लेवालेवणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारि० मह० सव्व० एकासणं पच्चक्खाइ. तिविहंपि आहार असणं खाइमं साइम अण्ण० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व०

देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि अण्ण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि. अण्ण० सह० म० सव्व० वोसिरामि इति चउव्विहार उपवास पच्चक्खाण ॥ ९ ॥

सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० पाणहार पोरसिं साड्ढ पोरसिं पुरिमड्ढ अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अण्ण सह० पत्थ ण० दिसा० साहु० सव्व देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि. अ० स० म० सव्व० वोसिरामि इति तिविहार उपवास पच्चक्खाण ॥

॥ पोरसिं साड्ढ पोरसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइम साइमं अण्ण० सह० पत्थ० दिसा० साहु० सव्व०

एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खामि. तिविहं चउव्विहपि आहारं असणं पाण खाइमं साइमं अएण० सह० सागा० गुरु० मह० सव्व विगइओ पच्चक्खामि. इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चक्खाण ॥ ६ ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइम साइम अएण० सह० मह० ॥ सव्व वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चक्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिम पच्चक्खामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अएण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति दिवसचरिम दुविहार पच्चक्खाण ॥६॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामिं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चक्खाण ॥ ६ ॥

॥ भवचरिम पच्चक्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहार असण पाण खाइम साइम अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ भवचरिम, दो आगारभी होय ॥ इति भवचरिम पच्चक्खाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुट्ठिसहि अंगुट्ठ सहि प्रमुख अभिग्रह पच्चक्खाणकेभी ए चार आगार. अण्ण० स० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चक्खाण ॥

अहण्णं भंते तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं देसावगासियं खित्तओणं उत्थ वा अण्णत्थ वा कालओणं मुहुत्त धारणाप्रमाणं जावनियमं पच्चक्खामि भावओणं जावगहेणं न गहिज्झामि छलेणं न छलिज्झामि अण्णेणकेवि रायकेणं वा एसो परिणामो न पडिवज्झइ ता अभिग्गह अण्णत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चक्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चक्खाण करे. तब देसावगासी नहीं पच्चक्खे. अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका छ आगार पच्चक्खे सो लिखते हैं. पाणस्सलेवाडेण वा अलेवाडेण वा अत्थेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चक्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार छच्च हुति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरिमड्ढे, एगासणंमि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्ते गट्ठाणस्सउ, अट्ठेवय आयंबिलमि आगारा ॥ पंच वयभाट्ठे, ऋप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिग्गहे, निवीए अट्ठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचउ, हवति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ श्री बृहदजितशांति स्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसतसव्वगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल भावे, तेहं विउल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ सप्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्व दुक्ख प्पसंतीणं, सव्व पावप्पसातिणं ॥ सया अजिय संतीण, नमो अजिअ संतिणं ॥३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तण, तव

पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किले सविमुक्खियरं, आजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ अलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइअ विमग्गह सुक्खाकारणं ॥ अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्झहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल भुयगवई पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ सुनय नय निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि दिविजमहिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्झव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥८॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिन्न संथिअं थिरं सरित्थ वत्थं मयगल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थ बाहुं धंतक-

णग रूअग निरुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म चारु रूव सुइ सुहमणाभिराम परम रमणिज्ज वरदेव दुंदु हि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ६ ॥ वेड्ढओ ॥ अजिअ जिआरिगणं, जिअ सव्वभय भवो हरिउ ॥ पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धओ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढम तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर णिगम जणवयवई बत्तीसारायवर सहस्साणुजाय मग्गो चउदस वर रयण नव महानिहि चउसट्ठि सहस्स पवर ज्जुवईण सुंदर वइ चुलसी हय,गय रह सय सहस्स सामी छण्णवइ गाम कोडि सामी आसिज्जो भार हंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेड्ढओ ॥ तं संतिं संतियर, संतिन्नं सव्व भया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥१२॥ रासाणंदिअय ॥ इक्खाग विदेह नरीसर, नरवसहा मुणि वसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बला विउल कुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा मम सरण ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूर

वंद हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम, लट्ठ रूव धंत रुप्प पट्ठ सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सव्वलोअ भाविअ प्पभावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमल ससिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तिय सवइगणाइरे अ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजमेअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगप रिरिंगिअं ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणवइ, सार गुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्झिअयं ॥ तित्थवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजण थुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयओ, संतिमहं महा मुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओ णय सिरिरइ अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबु हाहिव धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पभं तवसा ॥ गयंणं

गण वियरण समु'अ, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १६ ॥ किसलयमाला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअ ॥ देव कोडिसयसथुयं, समणसंघ परिवंदिअ ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयओ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आग यावर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहि हुलिअं ॥ ससंभमो अरण क्खुभिअ लुलिअ चल कुंडल गय तिरीड सोहत मउलिमाला ॥ २२ ॥ वेड्ढओ ॥ ज सुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंडिअ सुट्ठु सुविम्हिअ सव्वबलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरिअंगा, गाय समोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतोजिणं, तिगुण मेवय पुणोपयाहिण ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहपि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअ हंस वहुगा-

यिणिआहिं ॥ पणि सोणिथण सालणिआहिं, सकल कमल दललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभरविणमिय गायलयाहिं, मणिकंचण पसिढिल मेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वरखिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणोहर सुंदर दंसणियाहिं ॥२७॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भत्ति सन्निविट्ठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंद, अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसव्व किलेसं पयओ पणमामि ॥ २६ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सा रिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयओ पणमिअस्सा जस्स ॥ जगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव वरत्थरसा वहुआहिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्खराभिराम सद्द मीसएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्झ गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय

मेहला कलावनेउराभिराम सद मीसिए कए अ देव नट्टिआहिं ॥ हावभाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्त चामर पडागजूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवत्थ सुलछणा दीव समुद्द मंदरदिसागयसोहिआ, सत्थिअ वसह सीहासिरिवत्थसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा. अदोस दुट्ठागुणेहिं जिट्ठा ॥ पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिंइट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एव तव बल विउल, थुअ मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमल, गइ गयं सासया विमला ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाइवि सुहनंदि-

मम य दिसउ संजमेनंदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउ-म्मासिय, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअ निसुणइ, उभउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम पयं, अहवा कित्तिं सुवित्थंडा भुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥गाहा॥ इति श्री बृहद जितशांतिस्तवनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ वृद्धशांतिलिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः श्रृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व्व मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत विदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानन्तरं सकलसुरा सुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्ह द्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयाति, ततोऽहंकृतानुकारमिति

कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं ॥ इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, भगवन्तोऽर्हन्त', सर्वज्ञा सर्वदर्शिन ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकरा ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ६, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसु व्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ६, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५ शान्ति १६, कुंथु १७,

अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भद्रंकर २४.

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा भवंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतुवो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८,

रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्तमान जिनजनन्य ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांती ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, त्रिदिता १३, अंकुशा १४, कदर्प्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४ एते वर्तमानचतुर्विंशति तीर्थंकरशासनदेव्य ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४. चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३. अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारक बुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सो। मयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दाविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृ कलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोद कारिणो भवंतु ॥ अस्मिंश्च भूमंडले आयतननिवासिनां साधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु॥सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानिपापानि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते

शान्तिनाथाय, नम शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामरा धीश, मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥ १ ॥ शान्ति शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरु ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषा शांतिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट ग्रहगतिदु स्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं जयति शांते ॥ ३ ॥ श्रीसगपौरजनपद, राजाधिपराजसनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्याना व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीजनपदाना शांतिर्भवतु, श्री राजाधिपाना शांतिर्भवतु श्रीराजसंनिवेशाना शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकाना शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्व नाथाय स्वाहा ॥ एषा शांति· प्रतिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु शांतिकलश गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमाजलिसमेत, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचि शुचिवपु पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृत, चन्दन तिलक विधाय पुष्पमाला कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शांतपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजति गायंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्,

कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अर्हं तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्हनयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं असुहोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशांति समाप्ता ॥

॥ अथ जिन पंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौ तमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमल प्रभसूरींद्रो, भाषते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः

॥ देवता ग्रे पवित्रात्मा, परमासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्याय तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिन ॥ अंग संधिषु सर्वज्ञ, परमेष्ठी शिवंकर ॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्री जिनो रक्षे, दाग्नेयां विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म नैर्ऋति च त्रिकाल वित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वर ॥ उत्तरा तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजन ॥ १० ॥ पाताल भगवानर्हं, आकाश पुरुषो त्तम रोहिणीप्रमुख्या देव्यो रक्षतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभव कर्णे युगल, नासिका चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्री सुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः जिह्वा सुपार्श्वदेवोयं, तालु चंद्र-प्रभो विभु ॥ १३ ॥ कंठ श्री सुविधीरक्षेत्, हृदय श्रीसु-शीतलः श्रेयांसो बाहु युगल, वासु पूज्य करद्वय ॥१४॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्यु-दरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडल ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं

रक्षे, दरो रोमकटी तटं ॥ मल्लिरूरू पृष्ठिवंशं, जंघे च मुनि सुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं ॥ श्री पार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी जलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् रक्षेदशेषपापेभ्यो. वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेत भयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्व वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुच्छाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियंस लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुच्छाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यां लक्ष्मीं मनोवांछित पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देव प्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूडामणिरेषजैनो, जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनो सज्झाय ॥

॥ चौपाई ॥ श्रावक तुं ऊठे परभात, चार घडी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारुं छे कुल कर्म कवण अमारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मनमांय ॥२॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिकमणुं करे रयणी तणु, पातक आलोई आपणु ॥ ३ ॥ कायाशक्ते करे पच्चक्खाण, सूधि पाले जिननी आण ॥ भणजे गणजे स्तवन सज्झाय, जिणहूंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नेम, पाले दया जीवंतां सीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषाल गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मिवत्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहम्मीतणा ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, करजे तास दया सु विशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसार देजे दान, महोटाशुमत करे अभिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश मक घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधि-

कानो परिहार ॥ मत भरिशकेनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म भाख ॥ ९ ॥ अनंतकाय कहीजे बत्रीश, अभक्ष्य बावीशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजे किम, काचां कवलां फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिभोजनना बहु दोष जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली मत करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ छाणां इंधण चुले जोय, वावरजे जिम पापन होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर मत धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंड मिथ्या मेल मत भरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारी ने भाखजे ॥ पांच तिथि मत करो आरंभ, पालो शीयल तजो मन दंभ ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहि, ऊंघाडा मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामे खरचो वित्त, पर उपगार करो शुभ

चित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणा परिहार ॥ दिवस तणा आलोए पाप, जिम भाजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे जिनवर चरण शरण भव भवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेत शिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं धन धन अवतार ॥ २ ॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातला, पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लाहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुर धाम ॥ कहे जिन हर्ष घणे ससनेह, करणी दुःखहरणी छे एह ॥ २२ ॥ इति श्री श्रावकनी करणी स० ॥

॥ अथ अट्ठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

रात्रिनी पाछली घडीयें निद्रा दूर करीने, पंच परमेष्टि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवस पडिलेही राख्या, जे पोसहना उपगरण, ते लेई पोसहशालामें थापनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो सयोग हुवे तो गुरुनी पासे आवी, भूमि प्रमार्जी एक खमास-

मण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीछें खमासमण देई ॥ इच्छा-
का. ॥ स० ॥ भ० ॥ पोसह मुंहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे
पडिलेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुंहपत्ति पडिलेहे,
पीछें उभो थई खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ०॥
पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीछें इच्छं
कही खमासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह
ठाउं ? गुरु कहे ठाएह; पीछे इच्छं कही खमासमण देई
उभो थई, आधो शरीर नवावी मुखें मुंहपति देई, मधुर-
स्वरें तीन नवकार गुणी कहे इच्छकार भगवन् पसाय
करी पोसह दंडक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥
पीछें करेमि भंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वोसिरा-
मि ॥ तक कहे. अब पोसह का पच्चक्खाण लेये, सो
लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चक्खाण प्रारंभः ॥

करेमि भंते पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ
वा, सरीरसक्कार पोसहं, सव्वओ बंभचेर पोसहं, सव्व-
ओ अव्वावार पोसहं सव्वओ चउविहे पोसहे, सावज्जं

जोग पच्चक्खामि, जावदिवसं अहोरत्ति वा पज्जुवासामि दुविह तिविहेणं मणेणं वायाए काएण, न करेमि न-कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुभाषण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमण ॥ इच्छाका० स० ॥ भ० सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ति पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणे सामायिक संदिस्साउं ? सामायिक ठाउं कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊभो थको तीन नवकार गुनी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय खमासमणे वेसणो संदिस्साउं, वेसणो ठाउं, कही, पीछें दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्साउं, सिज्झाय करु, कही खमासमण देई उभो थको, आठ नवकारनो सिज्झाय करे. शीतादि परिसहें दोय खमासमण पांगरणु संदिस्साउं, पांगरणु पडिग्गाउं ? कहे ए सर्व सामायिकविधि पूर्वें कह्यो छेतिमहीज करवो, पण इतनो विशेष छे. पहिलां इरियावही पडिक्कमी छे तेमाटें इहां सामायिक दंडक ऊच्चर्या पीछें इरिया

वही नहीं पडिक्कमणीजें ॥ पछें चैत्यवंदन, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण दुस्सामिण काउस्सग्ग करे. पछें पडिक्कमणोवखासीम स्झिाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीते पडिक्कमण करे. पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ बहुवेल संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सा वेह. पीछें इच्छं कही, खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ भ० ॥ बहुवेल करुं ? गुरु कहे, करेह पीछें इच्छं कही तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्री उपाध्याय जी मिश्र २, त्रीजे सर्व्वसाधु वांदी, कम्मभूमिहिं कम्म-भूमिहिं इत्यादि नमस्कार भणे, जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी सिज्झाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण करे, ते विधि पूर्वे आग्रंथमां लिख्यां छे तो पण संक्षेपें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेह. पीछें दोय खमा-समणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं अंग पडिलेहण करुं ? कहे पीछें गुरुवचनें इच्छं कही. धोतियो कण दोरो पडि-

लेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई इच्छकार भगवन्! पसाउ करी, पडिलेहण करावोजी ॥ एम कहे, स्थापनाचार्य पहिले ही स्थापे, अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई उक्त रीते आज्ञा मागे पीछे खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ म० ॥ भ० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछे इच्छ कही, मुहपत्ती पडिलेही दो खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ मं० ॥ भ० ॥ ओही पडिलेहण संदिस्साउ ? गुरु कहे, सहिस्सावेह ओही पडिलेहण करूं ? गुरु कहे, करेह

॥अथ २४ थंडिलां पडिलेहण पाठ लिख्यते॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे। ॥१॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥२॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥३॥ आगा आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥४॥ आगाढे मज्झे पास वणे अणहियासे ॥५॥ आगाढे दूर पासवणे अणहिया ॥६॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवण अहियासे ॥८॥ आग दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्न

पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मज्झे पासवणे अ-हियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥१२॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणाहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणाहियासे ॥१४॥ अ-णागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणाहियासे ॥ १५ ॥ अ-णागाढे आसन्ने पासवणे अणाहियासे ॥ १६ ॥ अणा-गाढे मज्झे पासवणे अणाहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणाहियासे ॥१८॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पा-सवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासव-णे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहि-यासे ॥२२॥ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे ॥२३॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंडिल-पडिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंडिला शय्याके दोनुं तरफ दाहिणे पासे ३, वामपासे ३, पडिलेहे ॥ ६ थंडिलां दरवज्जेके भीतर पा-

सें दहिणें ३, वामें २ पडिलेहे ॥ ६ थंडिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पडिलेहे ॥ ६ थंडिलां जिहा उच्चार प्रस्रवणकी जगा होवे, ते दोनु तरफ पडिलेहे ॥ इति २४ थंडिला पडिलेहणविधि संपूर्ण ॥

पीछे इच्छं कही, कंवल वस्त्रादि पडिलेही पोसह शाला प्रमाजी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. इहा आचार दिनकरमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ वसती संदिस्साउ ? वसती पडिलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ सिज्झाय संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झाय करु ? गुरु कहे करेह पीछें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, भणे, गुणे, वखाण सुणे. इम करता पूर्ण पहुर दिन चढ्या. उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपडिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई इरियावही

पडिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही पान भोजन पात्र पडिलेही राखे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें वेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें वेसे. पीछें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ ०॥ चैत्यवंदन करुं? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग करे. मुखें लोगस्स कहे. संडासा प्रमार्जी वेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे- "जं किंचि नाम तित्थं" इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. उभो थई अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती० अन्नत्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुई की गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक न

र० पारी दूसरी थुई की गाथा कहे पीछे पुक्खर वरदी० सुअस्स भग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीछे सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च गराण० अन्नत्थू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुईकी गाथा कह कर बेठके नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहतचेइ० कहे. इसी तरें चार थुइये देव वादी बेसे ॥ नमोत्थूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय -इत्यादि कही पीछे स्तवन कहे. पीछे जयवीयराय कही. नमोत्थूण सव्वे तिहिविण वदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाच शक्रस्तवे देव-वदन विधि जाणवो ॥

ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्य मे एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करे, वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव करी दोय वार चार थुई से देव वादे फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाइं " गाथा भणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे वली नमोत्थूणं कही, जयवीयराय कहे ॥ इति देववदन विधिः ॥

पीछैं निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमें. पीछैं सिज्झाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणकूं पच्चक्खाण पारे ॥

हवे पच्चक्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ।

खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछैं इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहार अमुक पच्चक्खाण पारूं ? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछैं यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहार पारूं ? गुरु कहे, आयारो न मोतव्वो. पीछैं तहत्ति कही, अमुक पच्चक्खाण चउविहार कह्यो, एम कही एक नवकार गुणी पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहिअं. तस्स मिच्छामि दुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्झाय कही यथासंभवें अतिथिसंविभाग करी पाणी पीवे ॥

तथा उपधानवाही हुवे तो पोरिसी प्रमुख पच्चक्खाण पारी आहार करे. पीछें आसण बैठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चक्खे, पीछें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चक्खाण पारखे का विधि ॥

पीछें जो वहिर्भूमि जावणो हुवै, तो आवस्सहीं कही उपयोगी थको, निर्जीव थंडिलेजई अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवु कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कहे; । इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ गमणागमणं आलोयह ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इच्छं कही गमणागमण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संडासा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी पोसहशालायें आव्ये ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडिय, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं, एम कही वेसे. पीछें पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह. इच्छं कही दूजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसहशाला प्रमाजुं ? गुरु कहे, प्रमाजेह. पीछें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरु वचनें इच्छं कही मुहपत्ती पडिलेही दंडासणो पूंजणी प्रमुखसें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीछै काजो शुद्ध करी, उद्धरी, एकांत विखरतो परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इच्छकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरु समीपें अथवा थापनाचार्य समीपे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय करूं ? उक्त रीतें क्षणमात्र सिझाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पा-

तिहार पच्चक्खे । उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वादणां दोय देई, पच्चक्खाण करे पीछे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि थंडिलां पडिलेहण संदिस्साउं; बीजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि थंडिला पडिलेहुं । गुरु वचनें इच्छं कही, दोय खमासमणे ॥ इच्छाका०॥ सं०॥ भ० वेसणो संदिस्साउं वेसणो ठाउं कही वेसे. वस्त्रकंबलादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे उपवासी तो छे तेमाटें सर्व पाछो कडिपट्टो धोतीयो कण. दोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेहवा. पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. एं विशेष छे ॥ पीछें कालवेला सीम सिज्झाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवण २४ थंडिला पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पाखी चउमासी पडिक्कमणो करे, संवच्छरीयें संवच्छरी पडिक्कमणो करे. तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्यो छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलोएमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें " ठाणे कमणे चंकमणे " इत्यादि पाठ कहे. सुंदो-

वंदन काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासमणं ॥ इच्छा-
का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? सिझाय
करूं ? कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिझाय
करे ॥ इति ॥

पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणाविधि एही पुस्तक में
लिख गये हैं वहांसे जान लेनां.

हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी
पोरसी सीम सिझाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख
करवी हुवे, तो आसज्झ कहे तो थको, भूमि प्रमार्जे थं-
डिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे, प्रश्रवण वोसिरावी,
स्वस्थान कें आवे. भगवत् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी एम
कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. पीछें राइसं
थारा विधि करे ॥

हवे राइ संथारा विधि कहे छे ।

खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ राइ
संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें
इच्छं कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. एक खमा-

समणं ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारो संदिस्साउं ? वीजं खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राई संथारो ठाउं ? पीछें गुरु वचनें इच्छं कही, चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सुधी चैत्यवदन करे. भूमि प्रमार्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीछे शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही त्रण कही सथारे बेसी, तीन नवकार तीन करेमि भंते उच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, 'अणुजाणह जिट्ठिज्झा अणुजाणह परम गुरु' इत्यादि राइ संथारा गाथा भणो, वाम हाथ सिराणे देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवाडो फेरे तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पडिक्कमे॥ पीछे जघन्यें पण तीन गाथानी सिज्झाय करी सोवे ॥ इति राइ सथारा विधि कह्यो ॥

हवे रात्रिंने पाछिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण दुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरि-

यावही न पडिक्कमे. पीछें दोय खमासमणें सिझाय सं-
दिस्सावी आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला सीम
सिझाय करे. पडिक्कमण वेला हुवां पडिक्कमणो पूर्वली
परें करे, परण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें
संथारा उवट्टणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पडिक्क-
मणो करी पडिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पडिलेहण करी,
धर्मशाला पूंजी काजो ऊद्धरी इरियावही पडिक्कमे. दोय
खमासमणें सिझाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख
सिझाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

अथ पोसह पारने का बिधि लिखते हैं ॥

खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. फेर खमासमण
देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह पारूं ?
गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमा-
समण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह
पार्युं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे
खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उभो थको तीन नवकार
गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण

देई कहे ॥ इच्छाकाः ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारूं? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो. पीछे यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भं० ॥ सामायिक पारयु ? गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो. पीछे तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रे उभो थको हाथ जोड्यां मुहपत्ती मुखे आडी थका तीन नवकार, गुणी संडासा पडिलेहे. गोडालीयें वेसी मस्तक नमावी, " भयवं दसन्नभद्दो " इत्यादि भावनारूप गाथा कहे. पीछे पोसहना उपगरण सवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविभागव्रत साचवण निमित्ते साधु भणी निमंत्रणा करी, घरे ले आवे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीछे साधुने जे आहार दीधो. तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधि ॥

हवे दिन ऊग्या पीछे पोसह लें, तेहनो विधि कहे छे ॥

घरथकी निश्चित थई धर्मस्थानकें आवी. सर्व उपगरण पडिलेही. कचरो विधिशु परठवी इरियावही पडि-

क्कमे. खमासमण पूर्वक आग्या मांगी. पोसह मुहपत्ती पडिलेहे. आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिम हीज जाणवो. पण दिवस पोसहहीज करणो हुवे. तो पोसह दंडक उच्चरतां जावादिवसं पज्जुवासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अह पुहरी करवो हुवे. तो जाव अहो रात्रं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीछें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिण दुस्समिण काउस्सग्ग करी पडिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे २, अने जो पूर्वे पडिक्कमणो गुरु सार्थे करयो हुवे. तो पडिक्कमणानें अंतें पडिलेही राख्यां जे वस्त्र. ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणे बहुवेलं संदिस्सावे २. तथा जो गुरुसें जूदो पडिक्कमणो करयो हुवे. तो गुरुपासें आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी. आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पडिलेही वे वांदणां देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे. आलोएह. पीछें राई आलोवे. फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुट्ठिओमि अब्भितर. राईयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह.

पीछे सब पाठ कहे. राई खामे. पहिला पडिक्कमणामे नवकारसी पच्चख्यो थो तेमाटे पीछे गुरु साखे पच्चक्खाण उपवासनो करे. पीछे दोय खमासमणे वहुवेल संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणना. हवे पडिलेहण तो पूर्वे करी छे. तो पण आदेश मागवो ते एम खमासमण देई० ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण संदिस्साउ ? बीजे खमासमणे पडिलेहण करुं? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे इमहीज दोय खमासमणे अंग पडिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ती पडिलेहे पीछे वली खमासमण देई. इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी, एम कहे, पीछे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ भ० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहु ? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो राख्यो हुवे, तो पडिलेहे. नहीं तो वली आसण पडिलेहे दोय खमासमणे सिझाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे आगे सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाणवी, पण इहा अठ पुहरी पोसह तो पाछली रात वली सामायिक न लेवे, जिणे दिवस सबधी चउ पुहरी पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहरे पच्च-

क्खाण किया, पीछें दोयं खमासमणें ओही पडिलेहण संदिस्साउं ? ओही पडिलेहण करुं ? कहे, पण थंडिला पद न कहे. अने थंडिला नहीं पडिलेहे. यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह ग्रहण करणे में विशेष विधि ही, सो बताई ॥ इति दिन संबंधी पोसह ग्रहण विधिः

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्च रयो हे. पीछें संध्यानी पडिलेहण करतां रात्रि पोसहनो भाव थयो, तो पच्चक्खाण कियां पीछें दोय खमासमण पोसह मुहपत्ती पडिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंडक उच्चरे. तिहां जाव रत्ति पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे पीछे सामायिक विधि पूर्वे लिख्यो है, तिम करे पण सामायिक ऊच्चरयां पीछें दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी आठ, नवकार कही बेसणो संदिस्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पीछे दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ ओही थंडिला पडिलेहण

संदिस्साउं ओही थंडिला पडिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह इच्छं कही उपधि पडिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्वे लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तोंव अपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो भाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानके आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरयो नहीं तो वसती प्रमार्जी काजो परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडिक्कमे. पछिं चउविहार पच्चक्खाण करी दोय खमासमण पोसह मुहपत्ती पडिलेही दोय खमाणमण देई पोसह संदिस्सावे फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंडक उच्चरे. तिहा दिवसेसरात्तिं पज्जुवासामि कहे. सध्या हुवे, तो रात्तिं पज्जुवासामि कहे. पछिं बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे. दोय खमासमणें देई, सामायिक संदिस्सावे फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि भंते ऊच्चरे. दोय खमासमण देई सिझाय संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्सावी सीतादिकें बे खमासमण देई पागरणु, संदिस्सावे. पछिं बे खमासमण देई, अंग पडिलेहण

संदिस्सावी, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर बे खमासमण देई, ओही थंडिलां पडिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्या उपगरण हुवे तो पडिलेहे. जो सर्व उपगरण पडिलेह्यां हुवे तो पण थानक शून्यता टालवा भणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वेला सीम सिक्काय ध्यान करे. पछे उच्चार प्रश्रवण। २४ थंडिलां पडिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली राते वली सामायिक न लेवे. इतना निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

ठाणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकाय संघट्टे छप्पइयासंघट्टे सव्वस्सवि देवसिअ, दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिअ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी. अच्चक्खुविसयकायकी, सव्वस्सविराइअ. दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,

इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहने की स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंडण पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणंकेवलन्नाण-गेहं ॥ महानंद लत्थी बहु बुद्धिरायं, सुसवामि सीमंधर तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भव-स्सति ते सव्व भव्वाण ताया तहा संपयं ज जिणा वट्टमा णा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार स-सार कुव्वार पोयं, कलंका वली पकपक्खालतोयं मणोव छियत्थे सुमदार कप्पं, जिणंदागम वंदिमो सुमहप्प ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणभाजलीणा, कलारूव लावण्ण सोहग्ग पीणा ॥ वहं तस्स चित्तमि णिच्चं पि झाणं, सिरी भारई देहि मे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ श्री सीमधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

पचानतकसुमपंचपरमानदप्रदानक्षम, पंचानुत्तरसी-मदिव्यपदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमी

नरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्री पंचाननलांछनः स
तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधन
पराः पचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंचसुव्रतविधिप्रज्ञापना-
सादराः ॥ कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं,
तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥ २ ॥
पंचाचारधुरीणपंच मगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानवि-
चारसारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमा
रतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी पंचम्यादिफल प्रकाशनपटुं
ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां
स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, भक्तानां भविनां गृहेषु वहुशो
या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वा-
रत्नपंचालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिक
त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

अथ अष्टमी स्तुति ॥

चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन
करियें, चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम
चंद ॥ दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि

चोसट्ठ इंद्र, पूजे प्रभु जाना पाय ॥ इंद्राणी अपच्छर, कर जोडी गुण गाय ॥ नदीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठ्ठाइ महोच्छव, करता होडा होड ॥ २ ॥ शेत्रुजा शिखरें, जाणी लाभ अपार ॥ चउमासें रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥ भवियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूर साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणु, करियें व्रत पच्चक्खाण ॥ आठम तप करता, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

अथ मौनैकादशी स्तुति ॥

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, चितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्यागमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, चितौ० ॥२॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्ध-

समये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥ ॥ ३ ॥ सुरा सेंद्रा सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत छंद ॥

द्रेंद्रेंकि धपमप, धुधुमि धोधों ध्रसकिधर, धपधोरवं ॥ दोंदोंकि दों दों, दाग्डिदि दाग्डिदिकि, द्रमकि द्रण रण द्रेणवं ॥ भफिभ्र्यंकि भ्र्यंभ्र्यं झणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुरशैल शिखरे, भवतु सुखदं पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगड्दां धुधुक्कि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण, रणकि णोंणों, गुणगुणगुणगण, गौरवं ॥ भझि झेंकि भ्रूंभ्रूं, भणण रणर रण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकुलमीश, महेजिनाः ॥२॥ ठकि ठूंकि ठ्रेंठ्रें, ठदिद्रक ठदिद्रक, ठदिद्रपट्टा, ताड्यते ॥ तललोंकि लोंलों त्रेंपि त्रेंपिनि, डंपिडंपिनि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कलरवे ॥

जिनमतमनतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुन्उवे ॥३॥ धुंदाकि धुदा धुधुद्दि धुदा धुधुद्दि दों दों, अवरे ॥ चाचपट चचपट, रणकि णें णें दणण डेंडें, डवरे ॥ तिहा सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर, सेव-ता ॥ जिननाथ्यरगे, कुशलमुनिशं, दिशतु शासन, देव-ता ॥ ४ ॥ इति श्रीजनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

अथ आंबिल की स्तुति ।

निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ समता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंता लहिये, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक न-मियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातम थी करियें, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस

वलि सुणियें गुणगुं, नवपद केरो सारोजी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारोजी ॥ ४ ॥ विमल कमलदल लोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद से चक्र भविजन केरां विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ नायक सद्गुरु, श्रीजिनभक्ति मुणिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि पभणे, श्री जिन लाभ सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्री नवपद० ॥

॥ अथ पज्जूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिन पर्व पजूसण, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासे हुंती दिन पचास, पडिक्कमण संवच्छरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार करियें भलें भावें भरिये पुण्य भंडार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लाभ अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परभावना धूप अगर उक्खेव, इम भवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मीवच्छल करियें वार वार, केइ भावना भावे

कइ तपसी शिलधार ॥ अडदीह पजूसण एम सेवत आ-णद सुयदेवी सांनिय कहे जिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्री पर्युषणप० ॥

अथ उपदेशमाला पोसह सिद्याय लिख्यते ॥

जग चूडामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलओ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खूतिहुअणस्स ॥ ॥ १ ॥ सत्रच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिण-चंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जएज्झए ओवमाणेणं २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइ बहुयाइं असरिसजण-स्स ॥ इय जीयंतकराइं, एस खमा सव्वसाहूण ॥ ३ ॥ न चइज्झइ चालेउ, मइइ महावद्धमाण चिणचंदो ॥ उव-सग्ग सहस्सेहिं वि, मेरु जहा वायगुजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणओ, पढम गण हरो समत्त सुयनाणी ॥ जा-णतो वि तमच्छ, विम्हिय हियओ सुणइ सव्व ॥ ५ ॥ ज आणवेइ राया, पयइओ त सिरेण इच्छति ॥ इयं गुरुजण मुह भणिय, कयजलिउडेहिं सोयव्व ॥ ६ ॥ जह सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पयाग नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥

बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उवमा ॥ जवा पुरओ काउं, विहरंति मुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को ॥ गंभीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिओ ॥ ९ ॥ अपरिस्सावी सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमई य ॥ अविकच्छणो अचवलो, पसंतहियओ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावी जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जई संपयं सयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करेइ माणं, परियत्थइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमगस्स अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेच्छइ आसणगहणं, सो विणओ सव्व अज्जाणं ॥ १३ ॥ व ससय दिक्खिआए, अज्जाए अज्जदिक्खिओ साहू ॥ अभिगमण वंदण नमं, सणेण विणएण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिट्ठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो, किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्स सरणो, तइया वाणारसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तहवि य सा रायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं ॥ उयराहि एण इक्के,

ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसुं बहुयाण वि, मज्झाओ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिंनत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहि वरमप्प सक्खियं सुकयं । इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिट्ठता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्म रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं ॥ उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावह होइ ॥ २२ ॥ जं जं समय जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तो न वि सीउन्ह वायाविज्झडिओ ॥ संवच्छरमणसीओ, बाहुबली तह किलिस्संतो॥ ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तो पारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेण ॥ ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गव्विओ निरवणामो ॥ साहुजणस्स गरहिओ, जणेवि वयणिज्झयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व्व केइ

वुझंति ॥ देहे खणपरिहाणी· जंकिर देवेहिं से कहियं ॥ ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि पडिव- डंति सुरा ॥ चिंतिज्झंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥२८॥ कहतं भन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लिहियए ॥ जं च मरणा वसाणे, भव संसाराणुबंधि च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं· वोहिज्झंतो न वुज्झइ कोई ॥ जहवंभद- त्तराया, उदाइनिव मारओ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंच- लाए, अपरिच्चत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासक्कम्म कलि मल, भरिय भराते पडंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाणं, सदुक्करा इंति पावचरियाइं ॥ भयवंजा सा सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्झिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवडियाए ॥ तो किर मिगाव- ईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिझा० ॥

अथ राइसंथारा पोसह सिज्झाय ॥

निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमि भंते ३, कहियें, अणु- जाणह जिट्ठिज्झा, अणुजाणह परमगुरु· गुणगणरयणेहिं

मंडिअमरीरा ॥ वहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइसथारए ठामि॥ ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, वाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुड पाय पसारण, अतर तु पमज्जए भूमि ॥ २ ॥ सकोइय संडासं, उवट्टतेय काय पडिलेहा ॥ दव्वाई उव-ओगं, ऊसासनिरुंभणालोय ॥ ३ ॥ जइमे हुज्झ पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइरयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सव्व तिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय वंधण, कलहा भक्खाण परपरीवाउ ॥ अरइ रई पेसुन्नं, माया मोस च मिच्छत्त ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंमु, क्खमग्ग संसग्ग विग्घ भूआइ ॥ दुग्गइनिवंधणाइ, अट्ठारस पावट्ठाणाइ ॥ ६ ॥ एगो ह नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाण दसणसंजुओ सेसा मे वाहिरा भावा, सव्वे सजोगलक्खणा ॥ ८ ॥ सजोग मूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ॥ तम्हा संजोग सवधं, सव्वं तिविहेण वो-सिरे ॥ ६ ॥ अरिहतो मह देवो, जावज्जीव सुसाहुणो यगुरुणो ॥ जिण पन्नत्त तत्त, इयसम्मत्त मए गहिय ॥ १० ॥ चत्तारि मगल, अरिहता मगल, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता

लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्झामि, अरिहंते सरणं पवज्झामि, सिद्धे सरणं पवज्झामि साहू सरणं पवज्झामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्झामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ अरिहंता मज्झ देवया अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ, सिद्धाय मज्झ ॥ देवया सिद्धाय कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्त पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ आयरिया मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं मज्झ उवझाया मज्झ देवया उवज्झाया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ साहूणो मज्झ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्विक्के सत्त जोणि लक्खओ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंतिचउरो, चउदस लक्खा य मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वेजीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरंमज्झं न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअं, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्म ॥ ति-

विहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ।। खमिअ खमा विश्र मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलोयणह, मज्झय वेर न भाय ।। ५ ।। सव्वे जीवा कम्मवसु चउदह राज भमतु ।। ते मइ सव्व खमाविया, मज्झवि तेह खमतु ॥ ६ ।। इतिराइ सथारा गाथा स० ।।

।। अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम्

।। शत्रुंजय ऋषभ समोसरया, भला गुणभरया रे ।। सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमु रे ।। तीन कल्याणक तिहा थया, मुगतें गया रे ।। नेमीसर गिरनार ॥ ती० ।। १ ।। अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ।। भरतें भरा- व्या विंव ।। ती० ॥ आवु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ।। विमल वसइ वस्तुपाल ती० ।। २ ।। समेत शिखर सोहामणो, रलियामणो रे ।। सिद्धा तिर्थंकर वीस ती० ।। नयरी चपा निरखीयें, हियें हरखीयें रे ।। सिद्धा श्रीवासुपूज्य ।। ती० ।। ३ ।। पूर्वदिशे पावापुरी, ऋद्धे भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ।। ती० ।। जेसलमेर जुहारी यें, दुःख वारीयें रे ।। अरिहत बिंब अनेक ती० ।। ४ ॥ विकानेग्ज वंदीयें, चिरनंदीयें रे ॥ अरिहत देहरा आठ ।।

ता० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक्ष अंजावरो, अमीझरो रे जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरे रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंडल चाक चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे ॥ समय सुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ आज आंपे चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरिजायें सिद्धाचलगिरि जइएं वेहनी विमला चलगि रिजइऐ रे ॥ आ० ॥ सुण वेहनी ए गिरिनी महिमा, आदि जिनंद इम भांखी ॥ भरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आज० ॥ १ ॥ इण गिरिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख छोडीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गि

रि सन्मुख पगला भरता, आतम शुद्ध सुभावे ॥ कोडि भवारा पातक कीधा, एक पलक में जावेरे ॥ आ ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुंजो जोता लागे मिठो ॥ तीन भुवन में इण गिरि तोले, बीजो कोई न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरजनशु नेह धरीने, आगें ओलग करस्या ॥ अद्भुत आदि जिनेश्वर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्या रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेई पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठे लाहिस्या, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिर स्वरें जिनवर गुण गाता, जात्र नवाणू करिये ॥ मन गमती भमती चित्त भमता, भव सायर निसतारियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूर्व नवाणू वार प्रथम जिन, रायण रूंख आया ॥ ए तीरथ शुभ भावें फरसी, करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ उदे ए गिरिवर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्री जिनचंद सदा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरिस्तवनम् ॥

॥मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपू निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहु दि-

शि जिन चोवीश जी, ॥ म ० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावड शाला आठ जी ॥ आठ जोजन उंचु देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म ० ॥ २ ॥ भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोयरां थूभ जी ॥ आपे सूरत सेवा करे जी, जाण जोईने ऊभजी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी वली भागीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, रावण नाटक रंग जी ॥ म ० ४ ॥ दैव न दीधी मुझनें पांखडी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री दादाजी का स्तवन ॥

॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर, सेवक जन मन वंछित पूरण, समरयां होय हजूर ॥ कु ० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरण, अशुभ हरण भये दूर ॥ संघ उदय कर सद्गुरु मेरा, विनवें श्री जिनचंद सूर ॥ कु ०॥ ॥ २ ॥ इति ॥

॥ परममंगल श्रीदादाजीकाव्यानि ॥

॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले

लुठति ॥ मरुस्थलीकल्पतरु स जीया, द्युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥

॥ चिंतामणि॰ कल्पतरुर्वराकौ, कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्या ॥ प्रसीदतः श्रीजिनदत्त सूरेः, सव पदं हस्तिपदे प्रविष्टं ॥ २ ॥

॥ नो योगी न च योगिनी न च नराश्रीशस्य नो शाकिनी, नो वेतालपिशाचराक्षसगणा नो रोगशोकौ भय ॥ नो मारी नच विग्रहग्रह नयः भीत्या प्रणश्युच्चकैः, यस्ते श्रीजिनदत्तसूरिगुरवो नामाक्षर ध्यायति ॥ ३ ॥

॥ अथ सवईया लिख्यते ॥

बावन वीर किये अपणे वस, चौसठ जोगण पाय लगाई ॥ डाइण साइण व्यंतर खेचर, भूत रु प्रेत पिशाच पुलाई ॥ वीज तडक्क रुडक्क भटक्क, अटक्क रहे जु खटक्क न काई, कहे धर्मसिंह लघे कुण लीह, दिये जिनदत्ताकि एक दुहाई ॥ १ ॥

॥ गाजे शुभ ठोर ठोर ऐसो देव नही श्रौर श्रौर दादो दादो नामनें जगत्र जस्स गायो है, श्रापणेही भाय श्राय

पूजे लखलोक पाय, प्यास नकुं रान मांज पानी आन पायो है ॥ दाट घाट शत्रु थाट हाट पुरपाटणमें, देह गेह नेहसुं कुशल वरतायो है, धर्मसिंह ध्यान धरे सेवकां कुशल करे साचो श्रीजिनकुशल गुरु नाम युं कहायो है ॥ ॥ २ ॥

छप्पा ॥ कुशल अंग उछरंग, कुशलविणजेंव्यापारें ॥ कुशल देव देहरे, कुशल धन राजदुवारें ॥ पुराय पसायें कुशल, कुशल श्री संघ भणीजें ॥ वाहण आवे कुशल, कुशल घर घर गाईजें ॥ श्रीजिनचंद्रसूरि पुहपट्टधर, नाम मंत्र आरति टले ॥ श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां, नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥

कुशल वडो संसार, कुशल सज्जन घर चाहे ॥ कुशलें मयगल वार, लच्छि घर कुशलें आवे ॥ कुशलें वन वरसंत, कुशल धन धन्नरु वन्नो ॥ कुशलें घोडा थट्ट, कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ ए रसो नाम सद्गुरु तणो, कुशलें जग रलीयामणो ॥ भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें करी, घर घर होत वधामणो ॥ २ "

॥ अथ सूतक विचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होने सें दिन १० सूतक ॥ पुत्री जन्म होने से दिन १२ बार सूतक ॥ और जो स्त्री के पुत्र होय, उस स्त्री के एक मास को सूतक ॥ पुत्र होते मरण पामे तो दिन १ एक सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय भेंस, घोडी, साढ घरमांहे वियावे तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवा कलेवर घर बाहिर लइ जाय, जहा तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेश्रायें रहते पुत्र पौत्रादिक को जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन सूतक और जितना महीना को गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अब जिनके जन्म मरण का सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. और मृतक के सूतक में घर का जो मूल काधिया होवे सो १० दस दिन देव पूजा न करे ॥ और अन्य घर का ३ दिन देव पूजा न करे. और जो मृतक को छूवा होवे, सो १८ चोवीस महर पडिक्कमण न करे ॥ जो सदा का अखंड नियम होवे, तो समताभाव रख के सरण्पणामें रहे. परतु मुखसें नवकार मंत्र

का भी उच्चारण करे नहिं. स्थापनाजी के हाथ लगावे नहिं और जो मृतक को छुवान हो तो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे ॥

भेंस के जब बच्चा होय, तब १५ पंदर दिन पीछें दूध पीणों कल्पे गाय के बच्चा होय तों १७ सतरे दिन पीछें दूध पीणों कल्पे. बकरी का दूध ८ आठ दिन पीछें पीणों कल्पे ॥

१ ऋतुवती स्त्री, चार दिन भांडादिकों न छुवे. ४ चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ५ पांच दिन देवपूजा न न करे रोगादिक कारण तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्री कों रक्त चलता दीसे, जिसको विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेक से पवित्र होकर दिन ५ पांच पीछें स्थापना पुस्तक छुवे, जिन दर्शन करे, अग्र पूजा करे, परंतु अंग पूजा न करे, साधु कों पडिलाभे. ऋतुवंती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु ऋतु दिन में जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सूतकवाले

का घरका जलसे तथा अग्नि से १२ बारा दिन तक देव पूजा न करे. निशीथसूत्रक शोलमा उद्देशामें जन्म मरण के मृत कवालेका घर दुर्गंत्थनिक कहा है

गाय के सूत्र में २४ चोवीस प्रहरपीछें, भेंप के मूत्र में १६ प्रहर पीछें, गादर गधेडी, घोडी के मूत्र में ८ आठ प्रहर पीछें, नर नारी के मूत्र में चार प्रहर पीछें, समूर्च्छिम जीव उपजे. इत्यादि सूतक का संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतर में जानना ॥ इति सूतक विचार संपूर्णः ॥

॥ अथ ॥ जिन नव अंग पूजाना दुहा ॥

॥ जल भरि संपूट पत्रमां, युगलीक नर पूजंत ॥ ऋषभ चरण अंगुठडो, दायक भव जल अंत ॥ १ ॥ जानु वले काउसग्ग रह्या, विचरया देश विदेश ॥ खडा खडां केवल लह्यु, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरश्या वरशी दान ॥ कर कांडे प्रभु पूजना पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥ मानगयुं दोय अंसथी, देखी वीर्य अनंत ॥ भुजावले भवजलतरया, पूजो कंध महंत

॥ ४ ॥ सिद्ध सिल्ला गुणउजली, लोकांते भगवंत ॥ वसि या तिण कारण भवि, शिरशिखा पूजंत ॥५ ॥ तिर्थंकर पद पुन्यथी, तिहुंअण जन सेवंत ॥ त्रिभुवन तिलक समाप्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥ सोल पहोर प्रभु देशना, कंठविवर वरतुल्य ॥ मधुर ध्वनी सुरनर सुणे, तेणे गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने रोप ॥ हिमं दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्न त्रयी गुण उजली सकल सुगुण विश्राम ॥ नाभि कमलनी पूजना करतां अविचल धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नवतत्वना तेणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहु विध रागथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्री नव अंगपूजा ॥

॥ अथः शांतिजिननी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तुमारा, तोरा चरणकमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजिक नंदा, शांतिनाथमुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ २ ॥ चालिस धनुष्य सोवनमय काया, मृग लंछन

प्रभु चरण सहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ती प्रभु पांच-म सो हे, सोलमा जिनवर जग राहु मोहे ॥ जय० ॥ ॥ ४ ॥ मंगल आरति मोरी कीजें, जन्म जन्मनो लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोंडी सेवक गुणगावे, सो नरनारी अमर पद पावे ॥ जय ॥ ६ ॥

॥ अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा

विमल केवल भापण भास्कर । जगत् जतु महोदय कारण ॥ जिनवर वहुमान जलौ घत । शुचिमनाः स्न-पयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ओं श्रीं परम परमात्मने अनता-नत ज्ञान शक्तिये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्री मद्जि-नेंद्राय जल यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीय चदन पूजा

सकल मोहत मिश्र विनाशनं । परम शीतल भाव युत जिन ॥ विनय कुकुम दर्शन चदनैः । सहज तत्व विकाशकृतेर्चयोः ॥ २ ॥ ओं ह्रीं परम० (प्रथम काव्य के अनुसार ही) चदन यजामहे स्वाहा ॥

तृतीय पुष्प पूजा

विकच निर्मल शुद्ध मनोरमैः । विशद चेतन भाव समुद्भवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून धनैर्नवैः । परम तत्व मयं हिय जाम्य ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं परम० (प्रथम काव्य अनुसार ही) पुष्पं यजा महे स्वाहा ॥

चतुर्थ धूप पूजा ।

सकल कर्म महेंधन दाहनं । विमल संवर भाव सुधूपनं ॥ अशुभ पुद्गल संग विवर्ज्जनं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षत ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं परम परमा० (प्रथम काव्य के अनुसार ही) धूपं यजामहे स्वाहा ॥

पंचम दीपक पूजा ।

भविक निर्मल बोध विकाशकं । जिन गृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विशुद्धि समन्वितं । दधतु भाव विकाश कृतेर्जना ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं परम० (प्रथम काव्यानुसार) दीपकं यजामहे स्वाहा ॥

षष्टम अक्षत पूजा ॥

सकल मंगल केलि निकेतनं । परम मंगल भावमयं जिनं ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्शयन् । दधाति नाथ पुरो-

क्षत स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं (परम० पूर्व काव्यानु-
सार) अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

सप्तम नैवेद्य पुजा ॥

सकल पुदगल संग विवर्जनं । सहज चेतन भाव विलासकं ॥ सरस भोजननव्य निवेदनात् । परम निर्वृति भाव महंस्पृहे ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं परम० (प्रथम काव्यानुसार) नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

अष्टम फल पूजा ॥

कटुक कर्म विपाक विनाशन । सरस पक्क फल व्रज ढौकनं । विहत मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः ॥ कुरुत सिद्ध फलाय महाजना ॥ ओं ह्रीं परम० फलं यजामहे स्वाहा ॥

अर्घ पूजा ॥

इति जितवर वृंदं भक्ति पूजयंति । सकल गुण निधानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रति दिवस मनंतं तत्वमुदभासयंति ॥ परम सहज रूपं मोक्षा सौक्ष श्रयंति ॥ ओं ह्रीं परम० (पूर्व काव्यानुसार) अर्घ यजामहे स्वाहा ॥

वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैल चूला ॥ सिंहासनो परिगित स्नपनावशाने ॥ दध्यक्षतैः कुसुप चंदय गंध धूपैः ॥ कृत्वाच्चर्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ तद्वत् यावक वर्ग एव विधिनालंकार वस्त्रादिकां ॥ पूजां तीर्थ कृतां करोति सततं शक्त्याति भक्त्या हतां ॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजिता राते त्रिलोकीपते स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेशक्षयं कांक्षया ॥ ओं ह्रीं परम परमात्मने० (प्रथप काव्य के अनुसार) वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥

॥ इति लघु अष्ट प्रकारी पुजा समाप्त ॥

॥ श्राविकाओं को शील संरक्षा के लिये शिक्षाएं ॥

१—पर पुरुष के साथ वात चीत न करना.

२—पर पुरुष के साथ हंसी, मसखरी न करना.

३—पर पुरुष के साथ घर वाहार न जाना.

४—पर पुरुष के साथ परदेश गमन न करना.

५–पर पुरुष के साथ एकान्त में न बैठना.
६–पर पुरुष के साथ किसी प्रकार का खेल न खेलना.
७–पर पुरुष के साथ रात्रि में कहीं न जाना.
८–पर पुरुष के साथ मार्ग में खड़े न होना.
९–पर पुरुष के साथ एक ही वाहन पर सवारी न करना.
१०–पर पुरुष को स्पर्श नहीं करना.
११–पर पुरुष के शरीर पर तेल आदि मर्दन न करना.
१२–पर पुरुष के साथ एक आसन पर न बैठना.
१३–पर पुरुष से दृष्टि नहीं मिलाना.
१४–पर पुरुष के घर अकेले नहीं जाना.
१५–पर पुरुष को अपने घर में अकेले नहीं बैठाना.
१६–पर पुरुष से शरीर पर तेल, इतर आदि मर्दन न कराना.
१७–पर पुरुष से सदा वार्ता में और स्पर्श में दूर रहना
१८–किसी पुरुष के देखते हुवे टट्टी पिशाब न करना.
१९–किसी पुरुष के देखते हुवे स्नान न करना.
२०–किसी पुरुष के अंग न निरखना.
२१–किसी को घर का भेद न कहना.

२२–किसी के भरोसे घर नहीं छोड़ना.

२३–विवाहित स्त्री को पीयर में ज्यादा नहीं रहना.

२४–कभी एकान्त में नहीं बैठना

२५–कभी नाचन, धोबन, मालिन, आदि की संगती न करना

२६–कभी किसी पुरुष के सोने के मकान में नहीं जाना

२७–सदा अपने शरीर के लज्जा स्पद अंगो को अच्छी तरह ढका रखना.

२८–रास्ते में नीची दृष्टि कर धीरे धीरे चलना.

२९–मेले तमाशे में पुरुषों की भीड़ में नहीं जाना.

३०–वैश्या के घर मादिरा भवन, राजमार्ग और शहर बाजार इन स्थानों में या आसपास खड़ा नहीं रहना.

३१–निन्दनीक वीचार कभी नहीं करना.

श्रीमद् यति श्री केसरीचंदजी फलोधी वाले कृत स्तवन ।

महर करोजी महाराज अब मोपे महर करो ॥ अंकड़ी ॥ बोहत दिवस लग तुमपें सेवे तुही गरी बन वांज

अ० मा० ॥ १ ॥ चिन्ता चूरण वांछित पूरण, ओड सुधारण काज ॥ २ ॥ शरणो राखण तुमही समरथ अवर न कोई आज ॥ ३ ॥ केशरी चंद की येही अरजी भव भव राखो लाज ॥ ४ ॥ इति ॥

चाल—जैन धर्म पायो दोहलो।

मानोरे मानो मुझ बालमा। इतनी म करो रीस मानोरे२ ॥आकडी ॥ किण भरमायो तोने नाहला कुण दीनी तोने सीख ॥ खाणो पीणो रे छोडियो घर घर मागोरे भीख ॥ १ ॥ तुम विन सूनी सेजडी सूनो लागेरे संसार ॥ ऊभी झुर रही गोरडी मत छोडो घरबार ॥२॥ दुख करतांरे सुख ऊपन्यो जोवे राजुल नार केशरीचद कहे घण पिया दोनू उतर यारे पार मानोरे मानोरे मुझ बालमा ॥ ३ ॥ इति ॥

आयो सही अब जाऊं कहा शरणागत को शरणागत तेरी आयो सही० ॥ आंकडी ॥ तोहू समान मिल्यो नहीं कोई ढूढ फिरो धरती सब हेरी ॥ १ ॥ होय दयाल महा प्रभुजी अब, आन भई तुमसे भट मेरी ॥२॥ दास कल्याण करे विनती सुण, पारस नाथ सुपारस मेरी ॥३॥इति

धन धन संप्रति सांचो राजा जिण कीधा उत्तम कामरे ॥ सवालाख परसाद कराया कलयुग राखो नाम ॥ १ ॥ वीर संवत्सरे संवत् वीय तेरोत्तर रविवाररे ॥ महा सुदी अट्टम विम्म भराया सफल कियो अवताररे श्री पदम प्रभुनी मूरति स्थापी सकल तीर्थ शृणगाररे ॥ कलियुग कल्प तरु परगटिया वांछित फल दातारे ॥३॥ उपासरा बे हजार कराया दान शाला सत सातरे ॥ धर्म तणा आधार आरोपी त्रिजग हुवो विख्यातरे ॥ ४ ॥ सवा लाख पर शाद कराया छत्तीस सहस्र उद्धाररे ॥ सवा क्रोडी संख्यां प्रतिमा धातु पच्चाणुं हजाररे ॥ ५ ॥ इक परसाद नवो नित निपजे तो मुख सुद्धि होयरे ॥ एह अभिग्रह संप्रित कीनो उत्तम करणी जोयरे ॥ ६ ॥ अर्पूण

सज्झाय ।

धन धन श्रावक पुण्य प्रभावक विजय शेठनें शेठानी शुक्ल पक्ष विजया व्रत लीन्हा शेठ कृष्ण पक्ष रा जाणी धन धन श्रावक ॥ आंकडी ॥ हिवडै तौहार सिंगार सजी तनु काम घटा जिम हुलसानी ॥ सज सिंणगार चढी पिउ मंदिर हेज घणो हिय हरषानी ॥ धन० ॥ १ ॥ तीनं

दिवस मुझ व्रत तणी छे सेठ बोले मधुरी वाणी ॥ वचन सुणी नैनां नीर ढुलिया वदन कमल गयो विलखाणी ॥ धन० ॥ २ ॥ पूछे प्रीतम सुण सुख लीनी कुण चिंता मनमें आणी ॥ शुक्ल पक्ष गुरु मुख व्रत लीनो तुम पर- णी बीजी साणी ॥ धन० ॥३॥ अवर नार मुझ बेहन बरो वर धन वीरज धारी जाणी ॥ एकण सिज्या हेज अपर बल, तोपिण मन राख्यो ताणी ॥ धन० ॥ ४ ॥ वरषा काल भीजत घन गाजै चहुं धारा वरषै पाणी ॥ षट् ऋतु वरस द्वादश निर्मल शील पाल्योजी सुमति आ- णी ॥ धन० ॥ ५ ॥ विमल केवली करी प्रशंसा ये दो- नों उत्तम प्राणी ॥ खबर हुई संजम व्रत लीनो मोह कर्म धुल धाणी ॥ ६ ॥

सद्गुरु स्तवन ।

सद्गुरु श्री जिन दत्त सूरिंद अर्ज सुणो महोटाधणी। सद् गुरु आचारज गुण वत नव पद माहे दीपतो ॥ सद् बिरुद् आपरा अनेक किम कही आवे मो भणी ॥ सद- गुरु मिथ्यात्वी बलो देव विघ्न करं नै जीपतो ॥ सद्गुरु सहर सिरै मुलतान लोक वसै सुखिया सहु सद्गुरु जा-

ति महेसरी मांय मूदड़ो लूणो गुण वहू ॥ सद्गुरु प्रति बोध्यो गुरुराय मिथ्यामत्त छोडावियो ॥ सद्गुरु कुल ता-रयो म्हाराज म्हांनें पार उतारिया ॥ सद्गुरु सीखे सहु परिवार नित गुरुजी नां गुण पढे ॥ सद्गुरु अभयदेवना शिष्य छुनिजर खरी छे राजरी ॥ सद्गुरु दिल हुलसा-यो आज पोस वदी दशमी दिनें ॥ सद्गुरु राज मनोहर एर गुण गायो सांचे मनें ॥ इति ॥

चंदा प्रभुजीका स्तवन ।

चंदा प्रभुजी से ध्यान रें मोरी लागी लगनवा ॥ ॥ आंकडी ॥ लागी लगनवा तोडी न टूटे जब लग घट में प्राण रे मोरी लागी० ॥ १ ॥ दान शीयल तप भावना भावो जैन धर्म प्रति पालरे । मोरी लागी ॥ २ ॥ केसर चंदन अवर अरगचा हार चढाऊं गुलाबरे मोरी ॥ ३ ॥ हाथ जोड कर अरज करतह वंदिन सेठ खुशालरे ॥ ४ ॥

॥ श्री केसरिया नाथजी का स्तवन ॥

राग—तेरे नैनों ने जादू डारा किरपा करी नैं मोह तारोजी सांवरिया ॥ तारोजी सांवरिया मोहे ॥

॥ आकडी ॥ नाभिराय मरु देवी के नंदन श्याम वरण सुरत कारोजी सांवरिया ॥ १ ॥ देश मेवाड में आप विराजो नगर धुलेना गढ वारोरे सांवरिया ॥ २ ॥ देशदेश का जात्री आवे, आनंद हरष अपारोरे सांवरिया ॥ ३ ॥ आगे केइयेक भविक उवारे, अबके हमारो वारोरे सांवरिया ॥ ४ ॥ तू अविनाशी जगत प्रकाशी राग द्वेष से न्यारो रे सांवरिया ॥ ५ ॥ ओर देव में अनेक सेविया सरणो लियो भव थारोरे सांवरिया ॥ ६ ॥ उन्नीसो पैंसठ चैत्र कृष्ण पक्ष, छट्ठ दिवस सनीवारोरे सांवरिया ॥ १० ॥ दास कान को अपनो जानके भव भव पार उतारो रे सांवरिया ॥ ८ ॥

अथ आराधना विधी लिखीये छे।

प्रथम गुरु साखें तथा थापना चार्य साखें तथा देव साखें तथा आत्म साखें आराधना कीजें प्रथम इरियावही पडिकमीजें ४ नवकार नो काउसग्ग कीजें पछे लोगस प्रगट कहीजें पछे चैत्य वंदन कही जें सर्व मंगल ताईं उपरं थुई १ कहीजें पछे आपरा धर्मा चार्य ने खमावीजें

वांदी जे जिणां पास सें व्रत लीना हुवे तिके धर्माचार्य गुरु कहीजै पछे आलोयणा जुदी २ लीजे देवगति मनुष्य गति तिर्यचगति नरक गति एच्यार गति ने विषे जे कोई जीव हण्यो हुवे हणायो हुवे हणातां प्रते अनुमोद्यो हुवे मनें वचनें काया इकरी अरिहंत साखें गुरु साखें थापनाचार्य साखें मिच्छामिदुक्कडं. प्रथम देवगति नें विषें भवन पति देवतां माहें परमा धामी देवता नें भवे माहरे जीवे केइ जीवानें तारणा तरजणा करी हुवे कोई मिथ्यात्वी देव नें भवें कोई राग किती जीवनें उपसर्ग कीधा हुवे अथवा साधू मुनिराज नें अनुकूल प्रतिकूल उपसर्ग कीधा हुवे व्रतधारी श्रावक ने उपसर्ग अनुकूल प्रतिकूल कीधा हुवे ते सवि हुं० २ मनुष्य गति ने विषे ५ भरत, ५ एरावत, ५ महा विदेह एवं १५ कर्म भूमि ने विषे गर्भ ज समूर्छिम मनुष्य नें विषे अथवा १४ स्थानक समूर्छिम मनुष्य ना तेहनें विषे माहरे जीवें एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री पंचेंद्री सूक्ष्म बादर अपर्यासो प्रयापतो जे कोई जीव हण्यो हुवे हणायो० २ ३० अकर्म भूमि नें विषें ५६ अंतर द्वीप नें विषें गर्भज समूर्छिम अपर्यासो

मयातो जीवनी माहरें जीवें विराधना कीधी हुवे तो तं० ४ तिर्यंच गति नें विपे एकेंद्री में प्रथवी पाणी सुरड माटी लूण कार्य विना खूद्या हुवे चाप्या हुवे पाणी जीवाणी ढोल्या खारा मीठा पाणी भेला कीना पाणी विना अर्थे जतनायें न वावर्यो अग्नि तेउ कायनी जयणा न राखी खीरा फोड्या कोंड घाली अग्नि मा पाणी घाल्या वायु वायरो अजयणा ये लीनो वनस्पति कार्य विना चूटी खूंदी चापी साधारण अनें प्रत्येक ते माहि सूक्ष्म अने वादर अपर्याप्ता पर्याप्ता माहरे जीवें हण्यो हुवे वेंद्री में संख, कवड गीडोला लट वासी अन्न प्रमुख खाधो तेह नें विपे जे कोई जीवनी विराधना माहरे जीवें कीधी हुवें कराई हुवे करता प्रतें भलो जाणो हुवे तेंद्री में कान सिलाया माकण जू कीडी उदेही मकोडा ईलिका इत्यादिक माहरें जिवें हण्या हुवे हणाया हुवे हणता प्रतें अनुमोद्या हुवें चउरिंद्री नें विपे वींछु छणाइ भमरा भमरी तीड माहरें जीवें हण्यो हुवे हणायो हुवे हणता प्रतें अनुमोद्यो हुवे ते सवि ० ५ पचेंद्री तिर्यंचने विषें जलचर ने विषें सु सुमार मछ कछभ ग्राह मगर मछ गर्भज समू-

छिम अपर्याप्ता पर्याप्ता थलचर नें विषें चतुष्पद गौ वृष-
भ उष्ट्र खर घोडो हस्ति सिंह कुत्ता बिलाडी व्याघ्र स्याल
इत्यादिक हिंसक जीवनें विषे माहरे जीवें गर्भज समू-
छिम अपर्याप्ता पर्याप्ता जे कोई जीव हण्यो हुवें हणाता
प्रते अनुमोद्यो हुवे खेचरने विषें रोम पंखी चिडी कबूतरा
दिक चर्म पंखी वागुल चमचेडादिक अढाई द्वीप बाहिर समग्र
पंखी वितत पंखी गर्भज समूर्छिम पर्याप्तो अपप्तो जे कोइ
हण्यो हुवे हणायो हुवें हणतां प्रतें अनुमोद्यो हुवें उर-
परि जाति माहें सर्पादिक नी जाति भुज परि जाति मांहे
ऊंदर गिरोली प्रमुख गर्भज समूच्छिम अपर्याप्तो पर्याप्तो
जे कोई जीव माहरें जीवें हण्यो हुवें हणायो हुवें हणतां
प्रतें अनुमोद्यो हुवें ते सविहुं मने वचनें का० ६ नरक
गति नें विषें मारे जीवें परस्पर वेदना कीधी हुवे अथः
वा अन्य वेदना कीधी हुवें परभवनें विषें अनंता भवाने
विषे सात ही नरकां मांहे जे कोई वेदना कीधी हुवें
ते सविहुं० लघु नीत वडी नीती नें विषे रुधिर श्लेष्मा-
दिक जे कोई अजतनाइ परठव्या हुवें पर ठाव्या हुवें
परठवतां भुंडी रीतें अनुमोदना कीधी हुवे अथवा लघु

नीती में वड़ी नीती में जीवनी उत्पत्ति कीधी हुवे तेहनी निराधना कीधी हुवे ते सवि हुं० ८।

देवतत्व नें विषे अरिहंत देवनी सिद्ध महाराजनी आशातना कीधी हुवे अवर्ण वाद वोल्या हुवें तथा अरि हत महाराज नी प्रतिमानो अवर्णवाद आशातना कीधी हुवें विधनें टपकोलाग्यो हूवे वीवने पूठ दीधी हुवे अपूज प्रतिमा जी रही हुवे इण भवनें-विषे परभव ने विषे अनता भव नें विषे महारे जीवें कीधी हुवें कराइ हुवें० ९ गुरु तत्व ने विषे आचार्य जीनी उपाध्याय जीनी सुसाधू मुनिराज नी आशातना कीधी हुवे अवर्णवाद वोल्या हुवे शिक्षा रूप कठिन वचन कह्यो हुवें भात पाणी प्रमुख नो वेया वच्चन कीधो अनेरि पिणछती सक्ति छतें जो कोई म्हारें जीवें इण भव ने विषें अनंता भवाने विषे आशातना कीधी कराई हुवे १० धर्म तत्व नें विषे सार्धमकनो विनय वेयावच्च साचव्यो नहीं धर्मनी निंदा कीधी हुवें अवर्णवाद वोल्या हुवे साधर्मीक उपरि विरोधचिंतव्यो हुवे धर्म नी महिमा प्रभावना न कीधी हुवें इण भवनें विषे परभव नें अनता भवा नें

विष माहरे जीवें कोई विरोधो कीधो हुवे कराव्यो हुवे ११ ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार देव गुरु धर्म तेनें विषे देव द्रव्य खाधो हुवे देव द्रव्य विणास्यो हुवे विणासतां प्रते भलो जाणो हुवे देव नें विषे यथाशक्ति ई द्रव्य खरच्यो न हुवे ज्ञान द्रव्य खाधो हुवे विणास्यो हुवे विणासतां ने भलो जाण्यो हुवे ज्ञान नो भंडार विणास्यो हुवे रुडी परे भंडार री यतना किधी हुवे नहीं साधारण द्रव्य भक्षण कीधो हुवे विणास्यो हुवे यतना कीधी नही इण भवे परभवे अनंता भवा में माहरे जीवें ते ०१२ बाल हत्या की धी गर्भ गलाया हुवे पातन की थाहुवे विछोहो कीधो हुवे चिडी, कोवडी, कबूतर, मनुखना इंडा विणास्या हुवे माता सुं विछोहो कीधो हुवे वंधी खांने नाख्या हुवे चोपगानें बछा मनुख नो विछहो कीधो हुवे दूधनें लालचे वांधी राख्या हुवे इण भवनें पर भवनें अनंता भवनें विषें जकोइ माहरें जीवें ते सविहु० १३ प्राणाति पातनें विषें जीव हिंसा कीधी कलह कीधो लोकिक स्युं तेह सुंजीवनी हिंसा हुई अथवा आरंभने विषे एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चोरिंद्री

पंचेंद्री जीव संताव्या विणा स्या विणसाया हुवे अनेराई जो कोई परनें जीव हींसानां पापो पदेश दीधाहुव दिराया हुवे राज काजने विष संग्राम कीधा सस्त्र घाध्या मासादिक भक्षण कीधा लोकीरुनें माथे डंड कीधा बाधी खाने घाल्या गार वाल्या अनेगढ़ पिणराजरा हुकम सुं करने अथवा अन्य जातिनें धूणी प्रमुख घाली जीव विणा स्याहुवें १४ मृषावादनें विषे मोट का झूठ बोलि या आलदीया स्वदार मंत्र भेद कीधा कूडा लेख लिख्या थांपणमोसरुकीधा अनेराई झूठ बोलवाना उपदेश दीधा हुवे दिरायाहुवे. ०१५ अदत्तादाननें विषे चोरी कीधी गाठ खोलीर वाट पाडी चोरनें सबलदीवो चोरी कराई करतानें अनुमोदना कीधी कूड कपट करी आगला ने ठग्यो कूडा तोल मान मापा कीधा हुवें करायां हुवें करतानें भलो जाणो हुवें ०१६ मैथुननें विषय कुसील सेव्या हुवें सेवाया हुवें कन्या विधवा पर स्त्री सू कुशील सेव्यो हुवें व्रतधारी रो व्रत खंडन कीधो हुवें करायो हुवे करतानें अनुमोदना कीधी हुवें पराया नातरा विछोह प्राड्या हुवे जोडाया हुवें साढ आन्या हुवें घोडो हेराा

भैंस प्रमुख नें पाडो दिखायो हुवें देवतांरा चक्र वर्त्तिप्रमुखरा विषय सुखरी वांछा कीधी हुवे कराई हुवे करता प्रतें अनुमोदना कीधी हुवे० ॥ १७ ॥ परिग्रह ने विषे कूड कपट करी परिग्रह मेल्या अतितृष्णा कीधी रसायणां कीधी लोगांने ठग्या समुद्रादिकमें जहाजां में बेंसि गमन कीधा द्रव्य उपार्जन कर नारा पापो प्रदेश दीधा अनेराई पिण घणा अकार्य लोभनें वसें कीधा हुवें कराया हुवें करतांनें अनुमोदना कीधा हुवे इण भवनें विषे पर भवनें विषें अनंता भवांने विषें० ॥ १८ ॥ इति आलोयणा विधि ० ॥ पछैं ८४ लाख जीवयोनि खमावीजें पछैं १८ पाप स्थानक आलोई जे व्रत लीधा हुवें तिके पाछा उच्चरिजे आराधना पढ़ी जे ते लिखियें छैं ।

दोहा ।

सकल सिद्धि दायक सदा चोवीसें जिनराय ।
सह गुरु सामिन सरस्वति प्रेमें प्रणा सुंपाय ॥ १ ॥
त्रिभुवन पति त्रिसला तणो नंदन गुण गंभीर ।
शासन नायक जग जयो वर्द्धमान वड वीर ॥ २ ॥

इक दिन वीर जिणंद ने चरणें कर प्रणाम॥ भविक जीवना हित भणी। पूछें गोतम स्वामी ॥ ३ ॥
मुक्ति मार्ग आराधीइ, कहो किण परि अरिहंत।
सुधा सरस तत्र वचन रस, भाखे श्री भगवत ॥ ४ ॥
अतिचार आलोइय १ व्रत धरीय गुरु साख २ जीव खमायो सय लजे योनी चोरासी लाख ३० । ५ । विधि सूवली वोसिरा त्रिइ पाप स्थान अढार ४ च्यार सरण नित अनुसरो ५ निंदो दुरित आचार ॥६॥ सुभ करणी अनुमोदीइ ७ भाव भलेरमन आण ८ अण सण अवसर आदरी ९ नवपद जपो सुजाण १० ॥७॥ सुभगति आराधना तणा एहें दस अधिकार ॥ चितआणीने आदरो जिम पाचो भव पार॥८॥ एछिडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥ ढाल । ज्ञान दरसन चारित्र तप वीरज ए पांचे आचार एह तणा इह भव पर भवना आलोइयं अतिचाररे १ माणी ज्ञान भणो गुण खाणी वीर वदे इम वाणी रे माणी ॥ आकडी ॥ गुरु उल वीइ नहीं गुरु विनये काले धरी वहु मान सूत्र अरथ तदु भय करि सुधा भणीई वहि उपधान रे प्र० ॥ २ ॥ ज्ञानो पग रण पाटी पोथी ठवणी नोकर वाली तेह तणी कीधी आसातना ज्ञान भगतिन संभाली रे माणी॥३ ॥इत्यादिक

विपरीत पणाथी ज्ञान विराध्यो जेह आभव पर भव वली अभवां भव मिच्छामि दुक्कडं तेहरे प्राणी ४ समकित ल्यो सूध जाणी वीर वदे ईम वाणी रे प्राणी ॥ जिन वचनें शंका नवि कीजें न विपर मत अभिलाप साधूतणी निंदा परिहर जो फल संदेह मतराखरे प्राणी ५ मूढ पणु छंडो प्रशंसा गणवंत नी आदरीइ साहमीनें धर में करि थिरता भगति प्रभावना करी ईरे प्राणी ६ संघ चैत्य प्रासादतणों जे अवर्णवाद मनि लेख्यो द्रव्य देव को जे विणसाड्यो विण संतोऊ वेख्योरे प्राणी ७ इत्यादिक विपरीत पणाथी समकित खंडि उंजेह आभव परभव वली अभवो भव मिच्छामि दुक्कडं ते हरे प्राणी ८ ल्यो चित आणी० पांच सुमति त्रिण गुपति विराधी आठे प्रवचन माय साधु तणें धर्मे पर मादे असूध वचन मन कायेंरे ९ प्राणी० श्रावक ने धरमेइं सामायिक पोसह मां मन वालिजे जयणां पूर्वक ए आठे प्रवचन मायन पालीरे प्राणी ॥ १० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी चारित्र दोहल्यो जेह आभव पर भव वलि भवो भव मिच्छामि दुक्कडं तेहरें प्राणी ॥ ११ ॥ वारें भेदें तप नवि कीधां छतें

जोगिनिज सगनें घर में मन वच काया वीरज नवि फोर विउं भगंतरे प्राणी० १२ तपवीर ज आचार इण परि विविध विराध्या जेह आभव पर भव वलि भवो भव मिच्छामि दुक्कड तेहरे प्राणी० १२ वली विशेष चारित्र केरा अतिचार आलोइइं वीर जिणे सर वयण सूणी नें पाप भइल, सवि गोइईर १४ प्राणी ॥ ढाल पामी सुगुरु पसाय ए देशी पृथवी पाणी तेऊ वाऊ वनसपती एपां चई थावर कहयाए, १ करि कर सण आरभ खेत्रज खेडीआ कूवा तलाव खणावी आए २ घर आरभ अनेक टांका भइहरा मेडी माल चणावी आए ३ लीपण गुपण काज इणि परि परि परि पृथवी काय विराधी आए ४ धोवण नाहण पाय झीलण अपकाय छोति धोति करि दूह व्याए भाठी गरकूं भार लोहमू वनगार भाड भुजालिहा लागगए ६ तपण सेकण काज वस्त्र नीखा रण रगण राजण रसवतीए ७ इणि परि कर्मादान परि परिकेलवी तेउ वाऊ विराधी अए ८ वाडी वन आराम वावी वनसपती पान फूल फल चुंटी आए ६ पोंहकपाप पदी शाक सेक्या सुकव्या छिया छूया आर्थी आए १०

अलसी निएरंड घांणी घालिन इंधाणी तिलादिक पीली आए ११ घाली कोल्ह माहिं पीली सेलड़ी कंद मूल फल वेचियाए १२ इम एकेंद्रि जीव हण्या हणावी, आहणतां जे अनुमोदी आए १३ आभव परभव जेह वली अभवो भवते मुझ मिच्छा दुकडंए १४ करम सरमी आकीडा गाडर गंडोलाई लिपुअरा अलसीआए १५ वाला जलोप चूडेल विचली तर सतणा वली अथाणां प्रमुख नाए १६ इम वेइंद्री जीव जेमें दूहव्या ते मुझ मिच्छामि दुकडंए १७ उदेही जुंलीख मांकण मकोडा चांचण कीडी कंथु आए १८ गद्धही आधीवेल कान खजुरागीगोडा घनेरी आए १९ इम तेइंद्रि जीव जे मैंदूहव्या ते मुझ मिच्छामि दुकडंए २० माखी मच्छर डांस मसा पतंगी आ कसारी कोलि आवडाए २१ ढिंकण वींछ तीड भमरा भमरी अकों तांवग पड मांकडीए २२ इम चउरंद्री जीव जेमें दूहव्या ते मुझ मिच्छामि दुकडंए २३ जलमें नाखी जाल जल चर दूहव्या वन में मृग संतापियाए ॥ २४ ॥ पीड्या पंखी जीव पाडी पासमें पोपट घाल्या पींजरेए ॥ २५ ॥ इम पंचेंद्री जीव जेह परा भव्याते मुझ मिच्छामि. दुकडंए ॥ २६ ॥ ढांकणी [illegible] करीजी : एदेशी : क्रोध लोभ भय [illegible] [illegible]

दास थीजी गोल्या वचन अगत्य कूड करि वन पाग काजी लीग। जेह अदत्तरे जिनजी० १ मिच्छा दुकड आज आकडि॥तुम साखे महाजेर जिनजी देई सार काज रे।जिनजी मिच्छामि दुकडं आज॥ आकडी॥ देव मनुष्य तिर्यचना मैथुन सेव्याजेह विषयारस लंपटपणोजी घणो विटं वेदे हंरे जिनजी ० २ परिग्रहनी ममता करीजी।भव भव में ली आथीजे जिहा निते तिहा रही जी कोइन आवी माथेर जिनजी०३ रयणी भोजन ज करया जी कीधा भक्त अभच रसना रस ने लाल चें जी पाप करया पर तक्ष्गे ४ जिनजी व्रत लेइ विसारी आजी वली भागा पचखाण कपट हेतु किरिया करिजी कीधा आपवखाणरे जिनज ५ त्रिण ढाल आट दुहेजी आलोया अतिचार सिवगति आरा धन तणाजी एपाहिलो अधिकार रे जिन जी० ढाल साहेलडीनी पच महाव्रत आदरो साहेलडीरे अथ-वाल्यो व्रतबारतो यथासक्ती व्रत आदरो सा० पालो निर-तिचार तो १ व्रत लीयो संभारीइ सा० हियडे धोर अविचारतो सिव गति आराधन तणो सा० एवीजो अधिकारतो २ जीव सवे खमावीड सा० योनिचउरा सी लाख तो मन सूधों कर खामणा सा० कोई सूरोसनरा

खतो ३ सवी मित्र करि चिंत वो सा० कोईन जाणो शत्रु तो तो राग द्वेष इम परिहरि सा० कीजे जनमप वित्रतो सा० ४ साहमी संघ षमावीइ सा० जेउपनी अप्रतीत तो सजन कुटंब करि खांमणा सा० एजिनशा सनरी ततो ५ खमीयेने खमावीये सा० एहज धर्मनो सारतो सिवगति आरधन तणो सा० एत्रीजो अधिकार तो ६ मृषावाद हिंसा चोरी सा० धन मूर्छा मैथुन तो क्रोधमान माया तृष्णा प्रेम द्वेष पैं सुन्य तो ७ निन्दा कैह नींन की जीइ सा० कुंडन दीजे आल तो रति अरति मिथ्यात तजो सा० माया मोस जंजाल तो ८ त्रिविध त्रिविध वोसिरावीइ सा० पाप स्थान अढार तो सिवगति आराधन तणो सा० एचोथो अधिकार तो ९ ढाल हिव-इन सुणो इहां आवी आए एदेशी जनम जरा मरणें करिए एसंसार असार तो कर्यांकर्म अनु भवे ए कोईन राख-णहार तो १ सरण एह अरिहंत नोए सरण सिद्धि भग वंत तो सरण धरम श्री जैननोए साधु सरण गुणवंत तोर अवरनेंस विपरि हरिए ए च्यार सरण चित धार तो सिवगति आराधन तणोए ए पांचमो अधिकार तोड आ भव परभव जे करचाए पाप कर्म के लाख तो आतम

८ खें ते निंदीइए पडिक्रमिइं गुरु साखि तो ४ मिथ्यामते वरता- त्रिआए जे भाख्यु उत्सूत्र तो कुमत कदाग्रह नेंव सेंए जे उथ्थाप्यासूत्र तो ५ घडया घडावीया जे घणाए घरटी हल हथीयार तो भव भव में ।लि मूकीयाए करता जीव संहार तो ६ पाप करिनें पोसीयाए जनम जन्म वरि वार तो जन मतग पोहतांप छिए कोणें न कीवी सार तो ७ आभव परभव जे कर्याए इम अधिकरण अनेक तो ते त्रिविधें वोसिरावीइए आंणी हृदय विवेक तो ८ दुकृत निंदा इम करिए पाप कर्या परिहार तो सिवगति आरा ।धन तणोए छठो अधिकार तो ६ ढाल आदि तूजोइन जीवडा देशी धन धन ते दिन माहरो जिहा कीधो धर्म दान शील तप भाव नाटाल्या दुःकर्म १ अन से गुंजादिक तार्थनी जे कीधी जात्र जुग ते जिनवर पूजीआव लीपो- ष्यापात्र २ धन० पुस्तक ज्ञान लिखावीया जिणहर जिन चैत्य संघ चउविंध साचव्या ए साते क्षेत्र ३ धन २ पडि कमणा सु परे करया अनुकंपा दान साधु सूरि उवझाय नें दीधा वहुमान ४ धन० धर्मकाज अनुमोदिये में इम वारे वार सिवगति आराधन तणोए सातमो अधिकार ५ धन०

भाव भलो मन आणियें चित्त आंणी ठांम समता भावें भाविइंए आतम राम ६ धन० सुख दुख कारण जीवनें कोई अवरन होई करम आप जे आचऱ्या भोगविइं सोई ७ धन: समता विणु जे अनुसरें प्राणी पुन्य काम छार उपरे ते लींपुं झुंझंखरि चित्राम ८ धन० भाव भली परिंवीइ एधर्मनो सार सिव गति आराधन तणो आठमो अधिकार ९ धन० ढाल रेवत गिरि हुआ प्रभुनां तिण कल्याण एदेशी हिवे अवसर जांणी करि संलेखन सार अणसण आदरीइं पचखेच्या- र आहार लुलुता सवि मूंकि छांडी ममता अंगए आतम खेलें समता ज्ञान तरंग १ गति च्यारे कीधा आहार अनंत निसंक पणि नृपति नपांम्यो जीव लालची ओरंक दुल- होए वली वली अण सण नो परिणाम एहथी पांमीजे शिवपद सुर पद ठाम २ धनं धनो साल भद्र संख दोमे घ कुमार अण सण आराधी पांम्या भवनो पार शिव मंदिर जास्यें करि एक अवतार आराधन के ए नवमो अधिकार ३ दशमें अधिकारें महा मंत्र नवकार मनथी नवि मूको शिव सुख फल एहकार राजपतां जाइं दुर्गति

दोप विकार सुधरे एस मरो चउद पूरव नो सार ४ जन-
मंतर जाता जो धर्मं नोकार तो पातिक गालिया में सुर
अवतार ए नवपद सरिग्या मत्रन को संसाइह भवनें पर
भव सुख संपति दातार ५ जोवे भिल भिल्लडी राजा राणी
थाय नव पद महिमा थी राजसिंह माहाराव राणी रत्न
वती वे हु पाम्या छे सुर भोग इक भवथी लहस्ये सिद्ध
वधू संयोग ६ श्रीमतिने एवली मत्र फल्यो ततकाल फणे
धर फीटी नें प्रगट थइ फूलमाल शिव कुमार जोगी। सों
वन पोरसो कीय इम एणें मंत्रें काज वणाना सिद्ध ७ ए
दस अधिकारें वीर जिणे सर भाख्यो आराधन केरो विधि
जणें चित माहिराख्यो तेणे पाप पखाली भव भय दूर
नाख्यो जिन विनय करता सुमति अमृत रस चाख्यो ८
ढाल नमो भवि भाव सुए एदेसी सिद्धारथ राय कुल-
तिलोए त्रिस लामात मल्हार तो अवनीत ल कन्हे
अव तस्याए करवा अम्ह उपगार जयो जिनवीर
जी ए मे अपरानक स्वावणाप कहलान राहु पार
तो तू म्ह चरण आव्या भणीए जो तारें नो तार ? जपो
आस करिनें आविउए तुम्ह चरण महाराज तो आव्या

नें उवे खस्योए तो कि मरहस्यें लाभ्क २ जयो० करम अलुभ्कण आंकरीए जनम मरण जंजाल तो दुखु एह थी छमगोए छोड विदेव दयाल ४ जयो आज मनोरथ मुभ्क फल्याए नाठा दुख दंदोल तो तूठो जिन चोवीसमोए प्रगटया पुन्य कल्लोल ५ जयो भव भवविनय तुम्हार डो ए भाव भगति तुम्ह पाय तो देव दया करो दीजिये ए वोध बीजा सुप साप ६ जयो० कलस इम तरण तारण सुगति कारण दुख निवारण जग जयो श्री वीर जिनवर चरण सुणतां अधिक मन उल्लट थयो १ श्री विजय देव सूरिंद पट धर तीरथ जंग मइण जगें तपगच्छ पति श्री विजय प्रभुसूरि सूरितें जे जनसुगें २ श्री हीर विजय सूरी सीस वाचक श्री कीर्ति विजय सूरी गुरु समो तस सीस वा- चक विनय विजय थुरयो जिन चउवीसमो ३ सय सतर संवत उगणत्री सें रहिरा नेर चउमासए विजय दशमी विजय कारण कीर्ति गुण अभ्यासए ४ नर भव आराधन सिद्ध साधन सुकृत लील विलासए निर्झरा हे तें तव नर चिउ नाम पुण्य प्रकासए ५ इति श्री पुण्य प्रकास स्तवन संपूर्णम् ॥ ५ ॥ हिवे राणी पद्मावती जी वरासि खमा

वें ज्ञांण पणो जग दोहिलो इण वेलाइ आवे ते मुझ मिच्छामि दुक्कड अरिहंत नी सारवें जेमे जीव विराधीया चउरासी लाख ॥ ते मु० २ ॥ सात लाख पृथ्वी तणा साते अपकाय सात लाख तेउकायना सात वल वाय ॥ मु० ३ ॥ दस प्रत्येक वनस्पति चउदेसा धार विति चोरद्री जीवना वे वे लाख विचार ॥ ते मु० ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी च्यार च्यार प्रकासी चउदे लाख मनुष्यना ए लाख चउरासी ते मु० ५ इणभव पर भव सेविया जेण पाप अढार त्रिविधि करि वोसरू दुर गति दातार ६ ते मु० हिंसा कीधी जीवनी बोल्या मृषा-वाद दोषे अदत्तादान ना मैथुन नैउन माद ७ ते मु० परिग्रह मेल्यो कारिभो कीधो क्रोध विशेष मान माया लोभ मे कीया वली राग द्वेष ८ ते मु० कलह करी जीव दूहव्या दीधा कूडा कलक निंदा कीधी पार कीर-तिअरति निसंक ते मु०६ चाडी खाधी चोतर कीधोया पण मोसो कुगुरू कुदेव कुधर्म नो भलो आण्यो भरोसो ५० ते मु॥ ०खाट कीनेंभवमेंकीयाजीवना वधघात चीडी-मार भव चिडकल्यां मेमारया दिन नें रात्रि ११ते मु०

माछीनें भव माछला। जाल्या जल वास धवर भील कोली भवें मृग मार्या पारा १२ ॥ ते मु०॥ काजी मुल्ला ने भवे पढया मंत्र कठोर जीव अनेक जिवह कीधा कीधापाप अघोर १३ ते ०मु कोट वालनें भवें मे कीया अकरा कर दंड वंदीवां नेंमगावि आ कोरडा छडी दंड १४ ते मु० परमा धामीनें भवें दीधा नारकी दुख छेदन भेदन वेदना ताडना अति तीव्र १५ ते मु० कुभारनें भव जे कीयानी माह पचाव्या ते लीभव्र तिल पीलीया पापे पेट-भराव्या ते मु१६ हाली भव हड्या खेडीया फाडया भय वीना पेट खूडनी दाख कीया घणां दीधी वलदच पेट ते मु० १७ मालीने भव रोपीया नाना विध वृक्ष मूल पत्र फल फूलना लागाया पाप लक्ष ते मु० १८ ओधोवाही आगमी भरया अधिका भार पोठी ऊंट कीडा पड्या -दया नही रेल गार ते मु० १९ छीपाने भव छेतर्या कीधा रंगण पास अगनि आरंभ कीपाघणा धातुर वाद वाद अभ्यास ते मु० २० सूरपणे रण झूझता मारया माणस वृंद मदिरा मांसन सूंकीया खाधा सूलनें कंदते ॥ मु० २१ ॥ अंगार कर्म कीधा वणा वर में दव दीधा सूंस कीधा वीतरागना कूडा को कज पीधाते ॥ मु० २२ ॥

खांण खोणा वीधा तनी पांणी ओलंच्या आरंभ कीधा अति घणा पोते पापज संच्याले मु० २३ ॥ घिल्ली भव ऊदर गिल्या गिलोई हत्यारी मूढ गवार तेणें भवेजू लीख मारीते मु० २४ ॥ भाड भुंजाने भवें एकेंद्री जीव ज्वार चिंणा गंहू सेकिया पाडतारीवते मु० २५ ॥ खांडण पीसण गारना आरभ अनेक राधण ईधण गारना कीया पाप उदेकते मु० २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली सेव्या पाच प्रमादइष्ट वियोग पमाड़िया रोदन विखवादते मु० २७ ॥ साध अनें श्रावक तणां व्रत लेई भांग्या मूलनें उत्तर तणा मुझ दूषण लागा ते मु० २८ ॥ सांप विछू सिंहचीतरा सिकरानें समली हींसक जीव तणें भवें हिंसा कीधी सबली ते मु० २९ ॥ सुआवड दूषण घणा वालि गरभ गला व्या जीवाणी ढोल्या घणा सील व्रत भगाव्या ते मु० ३० ॥ भव अनंत भमता थका कीया कुटव संबंध त्रिविधि २ करि वोसरू तिण सूं प्रति वध ते मु० ३१ ॥ भव अनत भमता थका कीया देह संबंध त्रिविधि २ करि वोसरु तिण सू प्रति वध ते मु० ३२ ॥ भव अनत भमता थका कीया परिग्रह संबध त्रिविधि २ करि वोसरु करमूं

जन्म पवित्र ते मु० ३३ ॥ इण भव पर भव सेवया कीधा पाप असंख्य त्रिविधि २ करि वोसरु करुं जन्म पवित्र ते मु० ३४ ॥ राग वैराडीजे भणें एतीजी ढाल समय सुंदर कहे पापथी छूटे तत काल ते मुझ मिच्छा मि दुकडं ३५ ॥ इति श्री जीवरासि खमावणा संपुर्णम ॥ पछे च्यार सरणा उच्चरी जेंते लिखी येंछे चत्तारि मंगलं अरि हंता मंगलं सिद्धां मंगलं साहूमंगलं केवली पन्नतो धम्मो मंगलं चत्तारिलो गुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लो गुत्तमा साहु लो गुत्तमा केवली पन्नतो धम्मो लो गुतमा चत्तारि सरणं पवज्झामि अरिहंते सरणं पवज्झामि सिद्धे सरण पवज्झामि. साहु सरणं पवज्झामि केवली पन्नतो धम्मो सरणं पवज्झामि ॥ पछें पोते दुकृत कीधा हुवेंतिका निंदवीजे सुकृतनी अनुमोदना कीजे इतरा दिन माहरा सुकृत में धर्म ध्यान सामायिक पडिकमणा पोसा में तथा तीर्थ यात्रामें गयातिके सफलबाकी संसारीक पणारा कार्य में हासा में खेल में कतूहल में इतरा दिन इंद्रीयांरा २३ विषय वसवर्त्ती हुवा निर्फल गमाया सामाइय पोसह संठिअस्स गाथा कहीजें पछे पच्च खाण कीजें अरिहंत माहा-

राजगदरसण कीजे तथा कराईजे पछे धर्म ध्यान में अ-
वत्ति जें मवर्त्ताइ जें पासे वेटा होय तिके पिणयथा शकि
ई पच्चखांण करें इति आराधना विधि संपूर्णम् ॥२॥

॥ पूजा में सावधानी ॥

भगवान की द्रव्य पूजा प्रत्येक श्रावक को नित्य कर
ना चाहिये। सूखे उत्तम स्थान में स्नान करना चाहिये
आले गीले स्थान में स्नान न करना चाहिये पानी यतना
से वर्त्तना चाहिये स्नान में और प्रत्येक कार्य में पानी
को छान कर काम में लाना चाहिये ठंडा और गरम जल
शामिल नहीं करना चाहिये इस प्रकार यतना पूर्वक
शुद्ध जल से स्नान कर शुद्ध हो शुद्ध धोती पहन कर पू-
जा के लिये तैयार होना चाहिये धोती पूजन के कार्य
की अलग रखना चाहिये वायरेलू काम काज के समय
काम में नहीं लीजाना चाहिये स्नान कृत जल को कि-
सी वालू आदि के सूखे स्थान में छिटकवा देना चाहिये
भगवान के मंदिर में प्रवेश करते समय उत्तरा संग शरीर
पर अवश्य चाहिये चाहे सोने का हो या कपड़े का हो

मस्तक पर तिलक करके और मुख पर मुखकोश बांध कर पूजा करना चाहिये भगवान के मूल गंभारे में बिना मुखकोश न जाना चाहिये भगवान के सन्मुख खाली हाथ भी न जाना चाहिये निज शक्ति अनुसार मानक मोती अथवा चांवलही भगवान के सन्मुख भेंट अवश्य रखना चाहिये भगवान के केसर आदि चढाते समय मौन रखना चाहिये भगवान के अष्ट द्रव्यादि जो कुछ पदार्थ चढावे सो उत्तम और शुद्ध चढाना चाहिये नैवेद्यादि अपने घर से उत्तम रीति से तैयार कर चढाना चाहिये बाजारू खरीद कर नहीं काम में लाना चाहिये फल फूलादि अच्छे पके हुवे यतना पूर्वक लाकर चढाना चाहिये मंदिर में सर्व दीपकों पर फानस अवश्य ढंके रहना चाहिये और प्रत्येक तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों के दिवस उनकी पूजा और एक २ माला का जपना भी लाभदायक है.

इस पंचम आरे में जिनेश्वर देव इस क्षेत्र में साक्षात् न होने से जिन प्रतिमा द्वारा भगवान के दर्शन पूजन करना चाहिये जल, चंदन, अक्षत, नैवेद्य, पुष्प, धूप, दीप

आदि अष्ट द्रव्य से भगवान की पूजा हुल्लास भाव से यतना अर्थात उपयोग पूर्वक करना चाहिये.

यद्यपि जल, पुष्पादि सचित पदार्थों को पूजा में यतना पूर्वक उपयोग में लेने पर भी किंचित् हिंसा हो जाना सम्भव है तथापि इसमें निर्जरा अधिक होने से जैन सूत्रों ने आज्ञा फर माई है जिसके कितने ही दृष्टांत है.

१—आचारांग सूत्र में साध्वी को नदी आदि जल मे डूबती हुई को साधु को भी निकालने की आज्ञा है।

२–साधु ठल्ले गोचरी आदि कार्य गया हो तो भी सायंकाल होते ही पानी बरसता होतो भी भीजता हुवा भी निजस्थान में आजावे ऐसी आज्ञा है।

३–श्रीराय पसेणी सूत्र में सूर्याभ देवता ने भगवान के सन्मुख बत्तीस विधि नाटक भक्ति वश किया कहा है

४–राजा कोणिक अनेक हाथी घोडे फौज आदि साथ लेकर भगवान् क वंदन निमित्त गया बतलाया है।

५–साधुओं को ठल्ले गोचरी जाने की विहार करने की आज्ञा दी है, भगवान महावीर ने गौतम गणधर को

आज्ञा देकर देव शर्मा ब्राह्मण को प्रति बोध करने को भेजा था.

६-कोई अप्रीति का कारण उत्पन्न होने पर वा कोई भयंकर रोग फैलने पर साधु को चौमासे में भी अन्य ग्राम बिहार कर लेने की आज्ञा है.

७—श्रीजीवाभिगम सूत्र में साधु की, गणधर की और तीर्थंकर की इस प्रकार तीन प्रकार की चिता करना आदी दहन क्रिया के लिये आज्ञा फरमाई है.

८—तीर्थंकर भगवान की मृतक देह के सन्मुख इन्द्र महाराजने नमुत्थुणं कहा था और तीर्थंकर के निर्वाण पश्चात् इंद्र चारों दाढें पूजार्थ ले जाते हैं और अनेक देव चिमठी २ धूरि निर्वाण स्थान से ले जाते हैं श्री पावा पुरीजी में महावीर स्वामी के चिता स्थान से देवों के चिमठी २ धूरि ले जाने से गहरा गढा पड़ गया था जिसमें वर्षा का जल इकट्ठा होकर अब तालाब होगया है.

६—राय पसेणी में सूर्याभ देव ने जिन प्रतिमा की १७ भेदी पूजा करी नमुत्थुणं कहा ऐसा फरमाया है.

१०–जीवाभिगम सूत्र में उच्चजाति के देव शाश्वती जिन प्रतिमाओं की पूजन करते हैं ऐसा कहा है.

११–श्रीज्ञाता सूत्र में द्रोपदी जी ने जिनप्रतिमा पूजी नमुत्थुणं कह कर जिन प्रतिमा का वंदन किया ऐसा फरमाया है इत्यादि अनेक दृष्टांत हैं।

उपरोक्त दृष्टान्तों में हिंसा प्रत्यक्ष मालुम तो होती है तथापि उत्तम परिणामों के कारण और किंचित हिंसा और अधिक निर्जरा होने के कारण शास्त्रों में उपरोक्त आज्ञाएँ फरमाई हैं अल्प हिंसा किन्तु अधिक निर्जरा ऐसे कार्यों को उत्तम समझकर ही पूर्वजों ने श्री सिद्धाचल जी, शिखर जी आबूजी तारंगा जी आदि स्थानों पर अपने और अपनी संतान के लाभार्थ भगवान की पूजा के निमित्त ऐसे विशाल जिन मंदिर बनवा कर अगणित जिन प्रतिमाएँ स्थापन की हैं वहां जा उनके दर्शन पूजन करना अपना कर्त्तव्य है॥

लूणिया वंश की उत्पत्ति ।

बारहवीं शताब्दी में मुलतान नगर के राजा का दिवान मूंधरा महेश्वरी जाति का हाथी साह नामक था। राजा की सेवा यथोचित करने से और प्रजा का न्यायादि कर्तव्य उत्तम प्रकार से करने के कारण हाथीसा राजा और प्रजा दोनों को प्रिय था हाथी साह के लूणासाह नाम का पुत्र बड़ा चतुर और राज्य मान्य था मिती वैसाख सुद ९ बुधवार रातको लूणा अपनी स्त्री के साथ पलंग पर सो रहा था। कि किसी सांप ने आकर उसको काट दिया वो नींद से चमक उठा और तुरंत अनेक वैद्य और मंत्र वादी बुलवाये गये सबके प्रयास कर लेने पर भी लूणा को कुछ भी फायदा न हुवा लूणा मृतकवत् ही रहा श्री श्री दादा गुरु श्री जिन दत्त सूरि महाराज भी उस समय मुलतान ही में विराजते थे इसकी सूचना पाकर हाथीसाह गुरु के चरणों में जा गिरा पुत्र की रक्षा के लिये प्रार्थना की गुरुने उसी समय जाकर मंत्र

विद्या द्वारा उस ही सांप को वापिस बुलाया साप मनुष्य भाषा में कहने लगा गुरु! मेरे और इसके पूर्व भवों का वैर है इसने जन्मेजय राजा के यज्ञ में ब्राह्मण पन मे वेद मंत्र पढकर मुझ को होम डाला था इत्यादि इस लिये मैंने काट कर अपना वैर लिया है तब गुरु ने फरमाया हे देव किये कर्म बिना भोगे नहीं छूटते तेरा बदला तैंने ले लिया अब यह हमारा श्रावक होने वाला है इस लिये इसका जहर खींचले तत्काल नाग देव ने जहर वापिस खेंच लिया और मनुष्य भाषा में गुरु से प्रार्थना की कि मुझको जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुवा था जिससे मैंने पूर्वके भवों का सविस्तर हाल जान लिया सब हाल गुरु से सुनाया और सर्व लोकों से कहने लगा कि ये गुरु एका भवा वतारी है लूणा सावधान हो गया लूणे ने सम्यक्त युक्त श्रावक के व्रत पच्चक्खाण लेकर जैन धर्म अंगीकार किया गुरु ने ओसवाल वंश में इन को सम्मिलित कर लूणिया गोत्र स्थापन किया मूल गच्छ खरतर गच्छ । वैसाख सुद ७ गुरुवार, संवत् ११९२.

हिन्दी भाषा का अपूर्व जैन ग्रंथ।

श्री प्रभुभक्ति

नित्य अवश्य पढने योग्य।

भव भ्रमण के महान दुखों से मुक्त होने के लिये, और परम आनंद अर्थात् मोक्ष सुख को प्राप्त करने के लिये, वीतराग भगवान के बतलाये हुवे उचित साधन प्राकृत और संस्कृत के अनेक शास्त्रों को पढने से ज्ञात हो सकते हैं। जिसके लिये पूरे २ समय और विद्याध्ययन की आवश्यकता है। अनेक शास्त्रों को पढकर सद्ज्ञान प्राप्त करने के लिये यदि आपने योग्य विद्याध्ययन नहीं किया है। वीतराग भगवान का ध्यान वदन पूजन आदि करते समय मन की चचलता के कारण यदि आपका चित्त स्थिर नहीं रहता है। सस्कृत के स्तोत्र स्तुति आदि पाठ करते समय भावार्थ नहीं समझने के कारण यदि परमात्मा से पूर्ण प्रेम उत्पन्न नहीं होता और न भक्ति का आनद आता है तो प्रिय पाठक बन्धु "प्रभु भक्ति"

ग्रंथ को वी. पी. द्वारा मंगवा कर शीघ्र पढियेगा इस हिन्दी भाषा के सरल ग्रंथ में १६ प्रकरण हैं। इसको पढते समय चित्त एकाग्र हो प्रभु प्रेम में मग्न हो जाता है और प्रभु भक्ति का अपूर्व आनन्द आता है ॥

इन्द्रियों के क्षणिक सुखों के लिये सैंकडों रुपये सदा व्यय करते हो तो आत्मा के कल्याणार्थ इस ग्रंथ रूपी योग्य साधन को प्राप्त करने में हर्गिज देर न कीजियेगा। इस ग्रंथ को मँगवा कर आप अवश्य लाभ उठावें अतैव इस ग्रंथ का मूल्य केवल आठ आना डाक व्यय दो आना मात्र ॥

मिलने का पता—

मूलचंद बोहरा,
लाखन कोटरी,
अजमेर.